कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

सेवा के हित, किया समर्पित,
जीवन का हर पल ।
याद करें गुण, करें अनुकरण,
जीवन बने सफल ।।

भास्कर राव कलम्बी

जन्मशती विशेषांक

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 30, अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2019 (विक्रम संवत् 2076)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद

–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता, डॉ. रंजना त्रिपाठी

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- संपादकीय 2
- शुभाशंसा 3-4
- भास्कर राव : एक कुशल संगठक 5
- पुस्तक समीक्षा 7
- एक तपोमय जीवन 8
- जिनकी प्रभा से निकले हजार सूरज 13
- शोक संवाद 15
- मा. भास्कर राव : कुछ संस्मरण 16
- वज्रादपि कठोराणि... 18
- माननीय भास्कर राव वनवासी... 19
- प्रिय बसंतराव की स्मृतियाँ... 23
- मेरा उनसे नजदीक का सम्बंध रहा 24
- पुण्यस्मरण: श्रद्धेय भास्कर राव 27
- भास्कर राव कलंबी : एक महान... 29
- मा. भास्कर राव की जन्मशती ... 31
- सेवा कार्यों के प्रेरक : भास्कर राव 32
- भास्कर राव सबके थे 35
- स्मृतियों के झरोखे से 37
- बालेश्वर की वनयात्रा 38
- भास्कर राव - पथ प्रदर्शक 39
- सच्चे अभिभावक थे : भास्कर राव 41
- हरिद्वार में आयोजित अखिल... 42
- दिल्ली में मनाया जनजाति... 44
- कोलकाता हावड़ा महानगर ने... 45
- मेरे प्रेरणा स्त्रोत 46
- जशपुर में मनाई गई... 46
- अनुकरणीय... 47
- बोध कथा... 48
- कविता... 48

संपादकीय...

प्रोत्साहन, प्रेरणा व प्रेम का दूसरा नाम है भास्कर राव जी।

तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ।

उपरोक्त पंक्तियों में श्रद्धेय भास्कररराव जी का सम्पूर्ण जीवन दर्शन समाहित है। उन्होंने अपना तन-मन और सम्पूर्ण जीवन ही मातृभूमि की सेवा में लगा दिया। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों ही अनुपमेय है। धवल केश, गौर वर्ण, वात्सल्य बरसाते विशाल नेत्र, भव्य ललाट, प्रसन्न वदन, आत्मीयता के सागर, सहजता की मूर्ति, मृदुभाषी- यह था उनका बाह्य व्यक्तित्व, जो प्रथम दृष्टि में ही जन-जन को आकर्षित कर लेता था। वे सही अर्थों में महामानव थे। उनके तेज को व्याख्यायित कर पाये, उनके विराट व्यक्तित्व के भावार्थ को चरितार्थ कर पाएं, ऐसे शब्द कहाँ? उनके जीवन का हर पहलू हमारे लिए प्रेरणा का महान स्रोत बना हुआ है। उनका जीवन अपने लक्ष्य पर अटूट आस्था रखने की प्रेरणा देता है। जब कोई व्यक्ति पूर्ण समर्पण के साथ अपने स्वीकारे गये लक्ष्य से एकाकार हो जाता है तो लक्ष्य प्राप्त होकर ही रहता है। अपने राष्ट्र के चरमोत्कर्ष का लक्ष्य लेकर चल रहे कार्यकर्ताओं के लिए भास्कररराव जी का जीवन अपने लक्ष्य के प्रति सम्पूर्ण समर्पण का संदेश देता है। दूरदृष्टि सम्पन्न थे वे। वे एक सहृदय व्यक्ति थे जो साथियों एवं कार्यकर्ताओं की कठिनाइयों के समय हमेशा सहायता के लिए तत्पर रहते थे। उन्होंने अपनी बीमारी को भी अत्यंत साहस से झेला। सबसे सरोकार और सबकी बात सुनना उनकी विशेषता थी। शीघ्र ही किसी से घुल मिलकर अपनेपन का अहसास कराने की उनमें कला थी। संघ प्रार्थना में **पतत्वेषकायो नमस्ते नमस्ते** पंक्ति सुनते समय उनकी छवि आँखों के सामने आ जाती है।

इंसान जन्म लेता है, जीवन यात्रा पूरी करके वापस चला जाता है परन्तु विरले पुरुष ही होते हैं जो विरासत में अपने आदर्शों एवं सत्कर्मों के निशान छोड़ जाते हैं। भास्कर राव उन्हीं में से एक हैं। हमारा पुनीत कर्तव्य है कि हम उनके द्वारा प्रदर्शित पथ पर निरंतर गतिमान रहें और राष्ट्र निर्माण में सात्विक सहयोग करें। उनका जन्म शताब्दी वर्ष संगठन के लिए उनके बेजोड़ समर्पण की अद्वितीय गाथा के पुण्य स्मरण का अतुलनीय अवसर हमें उपलब्ध कराता है। उनकी जन्म जयंती मनाना हम सबके लिए गौरव की बात है। उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने का इससे बेहतर और कोई उपाय नहीं हो सकता कि उनके व्यक्तित्व व कृतित्व को समाज के सम्मुख लाया जाय। ऐसे कर्तव्यनिष्ठ और आदर्शप्रिय व्यक्ति की स्मृतियों को संजोए रखना उनके दाय को सुरक्षित रखना है। इस विशेषांक के माध्यम से उनकी असाधारणता एवं सात दशकों की तपस्या को उजागर करने का विनम्र प्रयास किया गया है। स्मारिका हेतु सामग्री जुटाने में अखिल भारतीय प्रचार-प्रसार प्रमुख श्री प्रमोद पेठकर का सहयोग उल्लेखनीय है। मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। संपादन एवं प्रूफ संशोधन के लिए डॉ. रंजना त्रिपाठी, श्रीमती तारा माहेश्वरी एवं रजनीश गुप्ता का सहयोग स्तुत्य है। श्रद्धा के सुधा कणों से अभिषिक्त यह विशेषांक सहृदय व्यक्तियों एवं कार्यकर्ताओं के मानस को आह्लाद ही नहीं प्रेरणा भी प्रदान करे, ऐसी अभीप्सा है। जन्मशताब्दी वर्ष पर उनके चरणों में कोटिश: नमन करते हुए प्रभु चरणों में प्रार्थना है कि हम सब पूर्ण समर्पण भाव से संगठन गौरव बढ़ाने में जुटे रहें। इति शुभम् ❑

- स्नेहलता बैद

दूरभाष : (07763) 223253, 223620
ईमेल : kalyanashram1952@gmail.com
पं. क्र. : 79, दिनांक : 09.10.1956

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम

केन्द्र : जशपुर नगर - 496331, जिला : जशपुर (छत्तीसगढ़)

संस्थापक अध्यक्ष : र. के. देशपाण्डे
अध्यक्ष : जगदेव राम उरांव

महामंत्री :
योगेश बापट

संगठन मंत्री :
अतुल जोग

संदर्भ क्र. : .....

दिनांक 19/11/2019

शुभाशंसा

प्रति,
आदरणीया स्नेह लता बैद
सम्पादिका
"**कल्याण भारती**" त्रैमासिक पत्रिका
पूर्वांचल कल्याण आश्रम

सादर नमस्कार,

आपके द्वारा प्रेषित दिनांक 31 अक्टुबर 2019 का पत्र मिला। अतीव हर्ष का विषय है कि कोलकाता महानगर का प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष दिनांक 15 दिसम्बर 2019 को वार्षिक उत्सव सम्पन्न हो रहा है। वार्षिक उत्सव के शुभ अवसर पर "**कल्याण भारती**" विशेषांक अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के संगठन मंत्री श्रद्धेय भास्कर राव कलम्बी जी के जन्म शताब्दी वर्ष के शुभ अवसर पर श्रद्धेय भास्कर राव की जीवनी एवम् पुण्य संस्मरण पर प्रकाशित हो रहा है।

श्रद्धेय भास्कर राव जी ने अपने संगठन कुशलता से कल्याण आश्रम के कार्य को व्यवस्थित स्वरूप दिया। आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर हजारों कार्यकर्ताओं ने अपने जीवन को समर्पित कर दिया।

आशा है आप श्रद्धेय भास्कर रावजी के जीवन के विभिन्न पहलुओं तथा उनके पुण्य संस्करणों पर प्रकाश डालने में सफल होंगी। आप "**कल्याण भारती**" वार्षिक विशेषांक के संपादन एवम् प्रकाशन में यशस्वी होंगी। हमारी हार्दिक शुभ कामनाएं।

आपका
जगदेवराम उरांव

35, चंचल स्मृति, गं. द. आम्बेकर मार्ग, वडाला, मुम्बई, पिन - 400 031, दूरभाष : 2224129615

Phone : (07763) 223253, 2
Fax : (07763) 220885
Registration : 79, Date : 09-10-1956

AKHIL BHARATIYA VANVASI KALYAN ASHRAM
P.O. & DIST. : JASHPUR NAGAR (CHHATISHGARH) PIN: 496 331

शुभाशंसा

सेवा में-
श्रीमती स्नेहलता बैद,
संपादक,
कल्याण भारती विशेषांक,
कल्याण भवन, मानिक तल्ला
कोलकाता-700 006

सादर नमस्कार,

मुझे आपके पत्र दिनांक 31 अक्टुबर 2019 से जानकारी मिली है कि पूर्वांचल कल्याण आश्रम के वार्षिकोत्सव, 15 दिसम्बर 2019 के पुनीत अवसर पर कल्याण भारती पत्रिका के विशेषांक का प्रकाशन हो रहा है। यह विशेष अंक मा. के. भास्कर राव जी, द्वितीय अ.भा.संगठन मंत्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रति समर्पित होगा। मुझे इस बात की जानकारी से प्रसन्नता हो रही है। मा. भास्कर राव जी से संबंधित यह विशेष अंक कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं के लिए विशेष रूप से पठनीय व संग्रह करने योग्य होगा। देश भर के कार्यकर्ता इस अंक से क्षेत्र में कार्य करने हेतु दिशा व उत्साह प्राप्त कर सकेंगे।

मैं इस विशेषांक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

आपका

कृपा प्रसाद सिंह
उपाध्यक्ष
अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम

श्रद्धेय भास्कर राव : एक कुशल संगठक

अतुल जोग
संगठन मंत्री, अ.भा. वनवासी कल्याण आश्रम

वनवासी कल्याण आश्रम-यह संस्था आज भारत की लगभग सभी जनजातियों में एवं जनजाति क्षेत्रों में कार्य कर रही है। 1952 के 26 दिसम्बर को वनयोगी बाला साहब देशपांडे द्वारा एक छोटे से छात्रावास से आरंभ हुआ यह कार्य आज देश के कोन-कोने तक फैला हुआ है। प्रारंभिक 25 वर्ष यह कार्य जशपुर के आस-पास एवं लोहरदगा में फैला। आपातकाल के पश्चात देश के विभिन्न प्रांतों के जनजाति क्षेत्रों में कार्यवृद्धि की योजना बनी। संघ के अनुभवी प्रचारकों को इस महत्वपूर्ण कार्य हेतु विभिन्न क्षेत्रों में भेजा गया। श्री बसंतराव भट्ट को बंगाल सहित उत्तरपूर्व क्षेत्र में कार्य हेतु भेजा गया। उसी प्रकार महाराष्ट्र में श्री बालासाहेब दीक्षित, उत्तर प्रदेश में श्री अवध बिहारी जी, श्री तिलकराज कपूर जी, आंध्र प्रदेश में श्री श्रीधर जी के द्वारा कार्य का आरंभ हुआ। देश भर के कार्य का समन्वय एवं संयोजन करने हेतु ऊर्जावान श्री रामभाऊ गोडबोले जी को सन् 1978 में अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम का प्रथम संगठन मंत्री बनाया गया। साथ ही विभिन्न प्रांतों में स्थानीय कार्यकर्ताओं की टोली खड़ी होने लगी।

कार्य का क्षेत्र एवं प्रकार नया था। जनजाति समाज में विभिन्न भाषा, खान-पान के भी अलग-अलग तरीके, आवागमन की ऐसी असुविधा जिसकी हम आज कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। कार्यकर्ता जब जनजाति गाँवों में मिलने के लिए जाते थे तब गाँव के लोगों के चेहरे पर प्रश्नचिन्ह साफ दिखाई देता था। इस शहर के लोग आज तक कभी नहीं आए आज अचानक यहाँ क्यों आ गए? इतने प्रेम से क्यों बात कर रहे हैं ? बार-बार क्यों आ रहे हैं ? किसने भेजा होगा? इनका कोई स्वार्थ अवश्य होगा। वनवासी समाज अनेकों विधर्मी एवं स्वार्थी तत्वों के षड्यंत्रों का शिकार बना है। जिस प्रकार दूध का जला छाछ भी फूंक-फूंक कर पीता है, उसी प्रकार वनवासी समाज कार्यकर्ताओं की परीक्षा ले रहा था। कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता सही में नि:स्वार्थ भाव से हमारे धर्म संस्कृति की रक्षा एवं सेवा करने आए हैं या दिखावा कर रहे हैं? यह परीक्षा कई जगह महीनों तक चली तो कई जगह बरसों तक चलीं। लेकिन कार्यकर्ताओं के अथक, नि:स्वार्थ प्रयासों से जनजाति समाज में विश्वास जगा। इसी कालखंड में नागारानी गाइदिन्ल्यू, एन.सी.जेलियांग, अजय देव बर्मन, हिप्सन राय जैसे उत्तरपूर्व के जनजाति प्रमुखों को जोड़ने में बालासाहेब देशपांडे, रामभाऊ गोडबोले, बसंतराव भट्ट एवं स्थानीय कार्यकर्ताओं का योगदान रहा। उसी प्रकार महाराष्ट्र में आवारी गुरुजी, ओड़िशा में विश्वनाथ प्रधान जैसे जनजाति कार्यकर्ता खड़े हुए।

श्री रामभाऊ गोडबोले जी के नेतृत्व में लगभग सभी राज्यों में छात्रावास, विद्यालय, आरोग्य एवं सेवा के विभिन्न प्रकल्प खड़े हुए। उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई का जशपुर के मुख्यालय में आगमन हुआ। उसी प्रकार दादरा नगर हवेली के रांधा के प्रकल्प पर राष्ट्रपति श्री ज्ञानी

जैलसिंह जी का आगमन हुआ। 1981 का दिल्ली में सम्पन्न प्रथम अखिल भारतीय कार्यकर्ता सम्मेलन एवं 1985 में आयोजित अखिल भारतीय महिला सम्मेलन कल्याण आश्रम के कार्य में मील के पत्थर साबित हुए।

1985 में श्रद्धेय भास्कर राव केरल के प्रांत प्रचारक वनवासी कल्याण आश्रम के सह संगठन मंत्री के रूप में पधारे। उनकी सादगी, सहज-सरल स्वभाव के कारण एवं कुशल संगठक होने के नाते भास्कर राव जी कल्याण आश्रम के कार्य में साल दो साल के अंदर ही घुल-मिल गए। वनवासी गाँवों में उनका भ्रमण आरंभ हुआ, कार्यकर्ताओं से मिलना-जुलना तथा आत्मीयता के व्यवहार के कारण भास्कर राव सभी को अपने लगने लगे। अपनी हृदय की शल्यचिकित्सा (open heart surgery) होने के बावजूद अनवरत परिश्रम करते हुए कल्याण आश्रम के कार्य को सर्व दूर फैलाया। उनके प्रभाव के कारण विभिन्न राज्यों से एवं विशेषकर केरल के स्वयंसेवक विभिन्न राज्यों में पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में सुदूर उत्तर पूर्वांचल के विभिन्न राज्यों में, छत्तीसगढ़ के चुनौतीपूर्ण बस्तर के घने जंगलों में संकल्पबद्ध होकर कार्यप्रवण हुए। कई महिला कार्यकर्ताओं को भी उन्होंने अन्य प्रांतों में भेजने का साहसी कार्य किया। आज भी कुछ कार्यकर्ता उसी प्रेरणा से कार्य कर रहे हैं।

लगभग 30 वर्ष पुरानी बात है, गुवाहाटी के कार्यकर्ताओं को एक दानदाता ने मारुति वैन कल्याण आश्रम के कार्य हेतु दान में दी। जिस समय संगठन के पास स्कूटर अथवा मोटरसाइकिल भी नहीं थी उस समय गाड़ी मिलना एक सपना सा लगता था। उस समय श्री भास्कर राव गुवाहाटी में थे। कार्यकर्ताओं ने आकर बड़े हर्ष के साथ भास्कर राव को यह शुभ समाचार दिया। कार्यकर्ताओं को लगा भास्कर राव पीठ थपथपायेंगे। लेकिन भास्कर राव जी ने गंभीर होकर पूछा आप ने जनजाति समाज को गरीब, बेचारा एवं असहाय बताकर तो नहीं सहयोग मांगा ना? यदि ऐसा बताकर मांगा होगा तो इसे वापस करो। कार्यकर्ता अवाक् रह गए। भास्कर राव जी ने समझाते हुए बताया जनजाति समाज की अच्छाइयों को बताकर समाज में करुणा भाव नहीं कर्तव्य भाव जगा कर सहयोग मांगना। यह दृष्टिकोण उन्होंने कार्यकर्ताओं को दिया।

प्रवास में समय निकालकर हर छोटे-बड़े कार्यकर्ताओं से आत्मीयतापूर्वक चर्चा करना, यह उनकी खासियत थी। एक बार चर्चा के दौरान उन्होंने बताया कि कल्याण आश्रम का कार्य यानि शहरी गैर जनजाति लोगों ने जनजाति समाज के लिए किया कार्य, ऐसा नहीं है। शुरुआती दौर में शहर से कार्यकर्ता वनवासी क्षेत्रों में जायेंगे लेकिन धीरे-धीरे वनवासी समाज के युवाओं को सक्षम एवं संगठनानुकूल बनाकर उनको कार्यकर्ता बनाना चाहता है। प्रारंभ में वह चाहेगा अपनी जनजाति के लिए कार्य करुँ लेकिन कल्याण आश्रम का प्रयास यह रहना चाहिए कि वनवासी कार्यकर्ता अपनी जनजाति से ऊपर उठकर सभी जनजातियों के बारे में सोचें एवं कार्य करें। उनके इन्हीं प्रयासों को आज विभिन्न प्रांतों में सफल होते हम देख रहे हैं। आज विभिन्न स्तरों पर समितियों में जनजाति कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ रही है, कई प्रांतों में प्रांत संगठन मंत्री, क्षेत्र संगठन मंत्री एवं आयाम प्रमुख के रुप में सफलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं।

एक बार एक कार्यकर्ता ने भास्कर राव जी के पास मोटरसाइकिल देने के बारे में आग्रह किया एवं अपनी बात का समर्थन करते हुए बताया कि

इस कारण मेरा घूमना बढ़ेगा। भास्कर राव जी ने पूछा- क्या गाँव के लोगों के पास मोटरसाइकिल हैं? कार्यकर्ता ने बताया नहीं है। फिर उन्होंने धीरे से समझाते हुए बताया देखो आप मोटरसाइकिल लेकर गाँव में जाओगे तो गाँव में कल्याण आश्रम के बारे में क्या धारणा बनेगी? **जिस समाज में हम कार्य कर रहे हैं उस समाज का साधारण व्यक्ति जैसा रहता है, वैसा ही हमें रहना है। सुविधाओं में दो कदम पीछे, परिश्रम में एवं सद्गुणों में दो कदम आगे रहना।** इस प्रकार संसाधनों के विवेक के संदर्भ में कार्यकर्ताओं को समझाया।

भास्कर राव जी ने संगठन की शाश्वत बातों को एवं सांगठनिक तंत्र को कार्यकर्ताओं को समय-समय पर सिखाकर संगठन का मार्ग आलोकित किया। आइए, इसी मार्ग पर हम चलें, सब चलें और साथ चलें। ❑

अमृत वचन

कागज अपनी किस्मत से उड़ता है और पतंग अपनी काबिलियत से। इसलिए किस्मत साथ दे या न दे लेकिन काबिलियत जरूर साथ देती है।

- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

भलाई करना कर्तव्य नहीं, आनन्द है क्योंकि वह तुम्हारे स्वरूप और सुख की वृद्धि करता है।

- जरथुष्ट्र

जैसा तुम सोचते हो, वैसे ही बन जाओगे। खुद को निर्बल मानोगे तो निर्बल और सबल मानोगे तो सबल बन जाओगे।

- विवेकानन्द

पुस्तक समीक्षा

कार्यकर्ताओं हेतु पठनीय पुस्तक

रामकथा आधुनिक व्याख्या एवं संभावनाएं

रामायण भारतीय संस्कृति की शाश्वतता है। हमारी संस्कृति और रामायण दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और मानव - जीवन के मूलाधार हैं, हमारे जीवन-मूल्यों की मंजूषा हैं। रामकथा का अनुवाद हमारे बीच अनेक रूपों में, विविध आयामों के साथ, अनेक भाषाओं में देश-विदेश के मानस-पटल पर छाया हुआ है। रामगोपाल बागला द्वारा गहन शोध के फलस्वरुप रचित 'रामकथा आधुनिक व्याख्या एवं सम्भावनायें' पुस्तक भी इन्हीं शाश्वत तथ्यों से अनुप्रेरित है।

पुस्तक में रामकथा की अनेक घटनाओं को नवजागरण और विकास के रूप में देखने का प्रयास किया गया है। विकास की सही परिभाषा समाज में होने वाला सकारात्मक मानसिक परिवर्तन है। श्रीराम का वनवास-काल कथा का महत्त्वपूर्ण अंश है। साथ ही दो विचारों का संघर्ष भी है। यह एक आंदोलन है, मानवता को नष्ट करने वाले और मानवता की रक्षा करने वाले हाथों का। राम की वनयात्रा विकास की यात्रा है। यह पुस्तक रामायण की घटनाओं, संवेदनाओं, आत्मीय संबंधों आदि को आज के भौतिक-विज्ञान एवं मनोविज्ञान के समकक्ष लाने तथा उनसे मिलाने का प्रयास है, जिसे यथासंभव तर्कसंगत और व्यावहारिक रूप दिया गया है। यह पुस्तक निश्चित रूप से वनवासी सेवा और संगठन से जुड़े कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणाप्रद पाथेय का कार्य करेगी। ❑

एक तपोमय जीवन

गुणवंत सिंह कोठारी
अ.भा.कार्यकारिणी सदस्य
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

श्रद्धेय भास्कर राव कलम्बी के प्रथम दर्शन मुझे 1984-85 में वनवासी कल्याण आश्रम के भिलाई में आयोजित अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में हुए। उस समय अपने हृदय की शल्य चिकित्सा कराने के कुछ समय उपरांत ही वे वहां आए थे। परन्तु सम्पूर्ण सम्मेलन को व्यवस्थित करने के लिए उन्होंने जो अहोरात्र प्रयत्न किया उसका दर्शन मुझे प्रथम बार उस समय हुआ।

उन्हीं दिनों की एक और बात मेरे ध्यान में आई। जब भास्कर राव का क्षेत्र बदल गया, अर्थात् वे केरल प्रांत प्रचारक के दायित्व से मुक्त होकर अपनी शल्य चिकित्सा कराने के उपरांत तत्कालीन सरसंघचालक पूजनीय बालासाहब देवरस के निर्देश पर कल्याण आश्रम में आए तो कल्याण आश्रम का मुम्बई कार्यालय उनका केन्द्र बना। उस समय उनके स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए तत्कालीन वरिष्ठ प्रचारक माननीय आबाजी थत्ते ने उन्हें मित्रवत सलाह दी कि वे कुछ समय तक वडाला स्थित कल्याण आश्रम कार्यालय में न रहकर नवयुग संघ कार्यालय में रहें ताकि उन्हें ठीक प्रकार से आराम मिल सके। अपने अधिकारियों के प्रति आदरभाव के कारण भास्कर राव ने आबाजी के सुझाव को ध्यानपूर्वक सुना परन्तु मन में विचार किया कि अब मेरा क्षेत्र बदल गया है और उस क्षेत्र का जो कार्यालय है, मुझे वहीं जाकर रहना चाहिए ताकि वहां कार्यालय में काम करने वाले कार्यकर्ताओं से मेरा आत्मीय सम्बंध बन सके और मैं उनसे समरस हो सकूं। इसलिए भास्कर राव ने कल्याण आश्रम के वडाला स्थित चंचल स्मृति कार्यालय में ही रहना शुरू किया।

कार्यालय की सफाई तो हम स्वयं भी कर सकते हैं

मुम्बई कार्यालय से जुड़ी एक और घटना का मुझे स्मरण हो रहा है। एक दिन सूचना आई कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सहकार्यवाह श्रद्धेय हो.वे. शेषाद्रि जी दोपहर के भोजन हेतु कल्याण आश्रम कार्यालय में आने वाले हैं। कल्याण आश्रम कार्यालय पर भोजन बनाने वाला कार्यकर्ता उसी दिन अपने गांव से लौटा था। मैं भी उसी दिन कार्यालय पहुंचा था। जैसे ही उस कार्यकर्ता ने आकर अपना सामान रखा, मैंने उसे तुरंत बुलाकर बताना शुरू किया कि माननीय शेषाद्रि जी दोपहर के भोजन पर आने वाले हैं इसलिए कार्यालय की साफ-सफाई आदि व्यवस्थाएं देख लेना। मुझे नहीं मालूम था कि इसी बीच भास्कर राव भी कार्यालय आ चुके हैं। वे अपने कक्ष में बैठे थे और उन्होंने सारी बातें सुन ली। उसके बाद उन्होंने मुझे बुलाया और कहा, *"देखो गुणवंत, ये भोजन बनाने वाला युवक अभी-अभी अपने गांव से आया है और आपने इसे आते ही काम बता दिया। ये छोटा सा काम तो हम भी मिलकर कर सकते हैं"*। भास्कर राव भोजन बनाने वाले सामान्य कार्यकर्ता की भी पूरे मन से चिंता करते थे।

एक-एक व्यक्ति को जोड़ने में कुशल

कार्यालय में रहते हुए काम करने की उनकी पद्धति के सम्बंध में एक घटना मुझे याद आ रही है। पत्र लिखने का उनका अभ्यास था। प्रतिदिन वे तीन-चार पत्र लिखा ही करते थे। पत्र लिखकर उसे लिफाफे में बंद करके और उस पर पता लिखकर ही वे उसे पोस्ट करने के लिए कार्यालय में देते थे। यह वैसे तो एक सामान्य

बात है परन्तु बहुत महत्वपूर्ण है। यानि अपने कार्य को स्वयं करना। कार्यालय सम्बंधी कार्य के संबंध में उन्होंने कभी भी आदेशात्मक दृष्टि से बात नहीं की।

मुम्बई में रहते हुए उन्हें धन संग्रह हेतु भी जाना पड़ता था। उस समय दिनेशभाई भंसाली कल्याण आश्रम कार्य हेतु बहुत सहयोग करते थे। ऐसे एक-दो सहयोगकर्ताओं से भास्कर राव हर महीने मिलने के लिए अवश्य जाते थे। मुझे भी उनके साथ जाने का सौभाग्य मिला। भास्कर राव सदैव निश्चित समय से पांच मिनट पूर्व निर्धारित स्थान पर पहुंच जाया करते थे। एक दिन हम दिनेशभाई से मिलने उनके कार्यालय पहुंचे। पहुंचते ही हमें स्वागत कक्ष में बैठाया गया। जैसे ही सूचना मिली तो दिनेशभाई ने इंटरकॉम पर भास्कर राव से बात कि और कहा कि "मुझे अत्यंत खेद है कि मैंने आपको भी बुला लिया, परन्तु इसी समय विदेश से एक महत्वपूर्ण पार्टी आ गयी है, जिससे मिलना आवश्यक है। इसलिए एक-डेढ़ घंटे का समय लगेगा।" भास्कर राव ने अत्यंत सहजता वे कहा, "नहीं, दिनेशभाई वह भी अपना काम है। आप उसे करिए, मैं प्रतीक्षा करता हूं। तब तक मेरे पास दूसरा काम है मैं उसे संपन्न कर लेता हूं।" उन्होंने बिल्कुल ऐसी प्रतिक्रिया नहीं दी कि आपने मुझे मिलने का समय दिया और मैं समय पर पहुंच गया हूं इसके बावजूद आप मुझे प्रतीक्षा करने के लिए कह रहे हैं। ऐसा अभिमान का भाव कभी प्रदर्शित नहीं किया। बल्कि यह भाव रहता था कि वे हमारे दानदाता और सहयोगी हैं इसलिए उनका नुकसान भी नहीं होना चाहिए। उस दिन मैंने देखा कि करीब दो घंटे बैठकर भास्कर राव पत्र लिखते रहे। दो घंटे बाद जब दिनेशभाई आए और खेद व्यक्त करते हुए कहने लगे कि भास्कर राव आज आपको मेरे कारण बहुत प्रतीक्षा करनी पड़ी। परन्तु भास्कर राव ने कहा कि नहीं दिनेशभाई, मेरे कई 'पेंडिंग' काम थे जो मैंने इस अवधि में निपटा दिये हैं। यह आपके कारण ही संभव हो सका है'। उन्होंने कभी ऐसी प्रतिक्रिया नहीं दी कि आपने मेरा समय बर्बाद कर दिया। एक-एक व्यक्ति को जोड़ने की उनकी कुशलता का अनुभव मैंने उस दिन किया।

कार्यकर्ता विकास

कार्यकर्ताओं की संभाल और उनका विकास करने में भास्कर राव सिद्धहस्त थे। केरल में वर्षों तक काम करने के कारण जिन कार्यकर्ताओं से उनके आत्मीय सम्बंध थे उन्हें प्रेरणा देकर उन्होंने जनजातीय क्षेत्रों, विशेषकर उत्तर-पूर्वांचल के क्षेत्रों में भेजा। 1991 में मैं एक बार उनके साथ वहां प्रवास पर था। उस समय मैंने देखा कि भास्कर राव अरुणाचल प्रदेश के जिलों में जा रहे हैं, टेनिंग में जा रहे हैं, नागालैंड में दीमापुर जा रहे हैं। वहां जाकर वे एक-दो दिन रहते थे। बस्तर में काम करने वाली महिला कार्यकर्ताओं जैसे बुधरी ताती आदि के पास भी वह हर दो-तीन महीने में समय निकालकर अवश्य जाते थे।

बाहरी आर्थिक स्रोत पर एक सीमा तक ही निर्भरता

कल्याण आश्रम के कार्य में आर्थिक आवश्यकताएं बहुत रहती हैं। उत्तर-पूर्वांचल के प्रांत, ओडिशा, वर्तमान झारखंड, बिहार सहित दस-बारह ऐसे प्रांत थे जहां हर समय कुछ न कुछ आर्थिक आवश्यकता रहती थी। भास्कर राव ने एक बार चर्चा में विषय निकाला कि जो सक्षम प्रांत हैं उन्हें कमजोर प्रांतों की मदद करनी चाहिए। ऐसे सक्षम प्रांतों में गुजरात, राजस्थान, दिल्ली, महाराष्ट्र आदि थे जो कमजोर प्रांतों की मदद करने के साथ-साथ कुछ राशि केन्द्र को भी देते थे। उसी क्रम में मुझे संगठन मंत्री रहते हुए 1997 में आने-जाने का अवसर मिला। हालांकि कोलकाता उस समय सिक्किम और अंदमान की सहायता करता ही था। वहां मैंने जब कार्यकर्ताओं के समक्ष विषय रखते

हुए कहा कि उन्हें एक प्रांत और गोद लेना चाहिए तो उन्होंने नागालैंड गोद ले लिया। इस कारण कोलकाता में धनसंग्रह बढ़ा। धन संग्रह बढ़ा तो हमने उन्हें कहा कि वे एक और प्रांत गोद लें। इसलिए उन्होंने अरुणाचल को गोद ले लिया। इससे सक्षम प्रांत कोलकाता की क्षमता बढ़ी और नगरीय कार्यकर्ताओं के समक्ष जब नया लक्ष्य रखना शुरू किया तो उसके कारण उन्होंने कमजोर प्रांतों को सहयोग राशि बढ़ाना शुरू दिया।

यह भास्कर राव का दृष्टिकोण था कि हमारा कार्य आत्मनिर्भर हो। उन्होंने इस ढंग की रचना संगठन के अंदर खड़ी की। उस समय उन्होंने हमारे दानदाताओं को भी दृष्टि दी। दिनेशभाई भंसाली का मैं पहले ही जिक्र कर चुका हूं। वे भंसाली ट्रस्ट के प्रमुख थे और कल्याण आश्रम से गहराई से जुड़े हुए थे। मैं उनके संपर्क में रहता था। जब भी मुम्बई जाता था तो उनसे मिलता था। एक बार चर्चा में दिनेशभाई ने कहा कि ''हम जैन हैं, इसलिए मांसाहार करने वालों पर हमारा धन खर्च नहीं होना चाहिए''। स्वाभाविक है उनके मन में कुछ बात थी। इसलिए मैंने भास्कर राव को बताया कि दिनेशभाई भंसाली का यह विचार है। भास्कर राव ने सुना। अब प्रश्न यह था कि दिनेशभाई को इस बिन्दु पर स्पष्टता कैसे लाएं कि दूरस्थ प्रांतों में तो सभी लोग शाकाहारी नहीं हैं, परन्तु वहां चलने वाले प्रांतों को सहायता करना भी जरूरी है। भास्कर राव के मन में आया कि दिनेशभाई की सोचने की दिशा को बदलना है। संयोग से 1989 में उदयपुर में कल्याण आश्रम का अखिल भारतीय अधिवेशन संपन्न होने वाला था। मैंने भास्कर राव को सुझाव दिया कि हम दिनेशभाई को उस सम्मेलन के निमित्त क्यों न उदयपुर बुलाएं? वे आ भी जाएंगे और उत्तर-पूर्वांचल के कुछ कार्यकर्ताओं के साथ उनकी एक विशेष बैठक रखी जा सकती है। उन्होंने तुरंत उस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। यह भास्कर राव की महानता थी कि कोई भी कार्यकर्ता यदि कोई व्यावहारिक सुझाव देता तो वे उसे तुरंत स्वीकार करते थे। भास्कर राव ने स्वयं दिनेशभाई को फोन किया और बताया कि उदयपुर में कल्याण आश्रम का अधिवेशन संपन्न होने वाला है और आप उसमें अवश्य आइए। दिनेशभाई आए। उस समय उत्तर-पूर्वांचल और ओड़िशा आदि प्रांतों के संगठन मंत्रियों के साथ दिनेशभाई की दो घंटे की चर्चा हुई। जब वहां की परिस्थितियों का उन्होंने वर्णन किया तो उसे सुनकर दिनेश भाई अवाक् रह गये। वहीं पर उन्होंने मन ही मन तय कर लिया कि इन सभी प्रांतों में मदद करने की बेहद जरूरत है। इसलिए प्रश्न अब मांसाहार और शाकाहार का नहीं रह गया था, प्रश्न यह था कि यदि मांसाहार करने वाले ईसाई बन गये तो वे भारत की धरती से कट जाएंगे। उन्होंने कहा कि मांसाहार कोई विषय नहीं, आप काम करते रहिए और वहां के लोग अपने साथ जुड़े रहने चाहिए। इस प्रकार भास्कर राव लोगों के सोचने का दृष्टिकोण बदलते थे। इससे लोगों की कार्य के प्रति श्रद्धा निर्माण होती थी। यदि हमने किसी के सोचने की दिशा तो बदल दी, परन्तु कार्य के प्रति श्रद्धा निर्माण नहीं की तो हमारी उपलब्धि क्या है?

कार्यकर्ताओं को संसाधन

अरुणाचल प्रदेश का एक प्रसंग मुझे याद आ रहा है। हाफलांग में आयोजित जेलियांगरांग हेराका एसोसिएशन के कार्यक्रम में अरुणाचल प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री गेगांग अपांग भी आए थे। उसके बाद जब भास्कर राव अरुणाचल के प्रवास पर गये तो हम नाहरलोगन में ठहरे हुए थे। गेगांग अपांग भी अपने प्रवास पर उसी क्षेत्र में थे। अचानक रात्रि में 10 बजे हमें समाचार मिला कि मुख्यमंत्री 11 बजे आने वाले हैं और सवेरे चले जाएंगे। इसलिए क्या 11 बजे भास्कर राव आकर मिल सकते हैं? हमें भी सवेरे असम के

लिए निकलना था, इसलिए रात्रि में ही द्वारिकाचार्य जी भास्कर राव को लेकर मुख्यमंत्री से मिलने गये। उस समय भास्कर राव ने दोनीपोलो का एक स्टीकर गेगांग अपांग को दिया। वे उस स्टीकर को लेते ही बहुत खुश हुए और कहने लगे, भास्कर राव जी 'दोनी पोलो' घर-घर पहुंचा दीजिए, हमारा अरुणाचल बच जाएगा। उसके बाद 'दोनी पोलो' के कलेंडर बांटने और मंदिर बनाने का काम बड़े पैमाने पर हुआ। उस समय तालिम रुकबो अरुणाचल कल्चरल सोसायटी में एक सरकारी अधिकारी थे। भास्कर राव ने जनजातीय नेताओं को साधन उपलब्ध कराये ताकि वे आसानी से क्षेत्र में काम कर सकें। उन्हें एक जीप दी गयी। एन.सी. जेलियांग को भी एक जीप दी गयी। ताकि वे अपनी सुविधानुसार पूरे क्षेत्र का भ्रमण करते रहें, क्योंकि इन नेताओं का पूरे क्षेत्र में घूमना हमारे कार्य के लिए बहुत उपयोगी और आवश्यक है। भास्कर राव की यह दृष्टि रहती थी। भास्कर राव जब नागालैंड जाते थे तो पहले गांव प्रमुख एवं ग्राम समिति के लोगों से मिलते थे। वे उन्हें बहुत सम्मान देते थे ताकि हमारा कार्यकर्ता सीखे कि ग्राम प्रमुख को हमें सम्मान देना है क्योंकि उसके बगैर हम वहाँ काम नहीं कर सकते। ये सारी बातें वे अपने व्यवहार से कार्यकर्ताओं को बताते थे।

पैतृक संपत्ति बेचकर शोध कार्य को बढ़ावा

इसी प्रकार जनजातीय क्षेत्र में शोध कार्य को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने जबलपुर के चौधरी शिवव्रत मोहंती को प्रेरणा दी। उसके लिए वन साहित्य अकादमी का गठन किया गया। परन्तु उनकी प्रतिभा को संगठन के ढांचे में नहीं बांधना है। इस प्रकार के लोगों की स्वतंत्र चेतना रहती है। हम यदि उन्हें मदद करें तो जो काम हम नहीं कर पा रहे हैं वह काम वे हमें करके दे देंगे। इसी दृष्टि से उन्होंने शिवव्रत मोहंती को विकसित किया और उसके बाद उन्होंने केरल स्थित अपनी पैतृक संपत्ति में से अपना हिस्सा बेचकर सारा पैसा वन साहित्य अकादमी के लिए दे दिया।

रियांग शरणार्थियों की मदद

वर्ष 1997 में मिजोरम से करीब 50,000 रियांग जनजातीय बंधुओं को निष्कासित कर दिया गया। वे लोग बहुत ही बुरी हालत में असम और त्रिपुरा में रह रहे थे। भास्कर राव सिल्चर के प्रवास पर थे। वहीं रियांग समाज के चार नेता, जिनमें एक का नाम साई बुंगा था, सिल्चर छात्रावास में भास्कर राव से मिलने आए। काफी देर बात हुई। उस समय कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता जो उनकी मदद कर रहे थे उससे वे संतुष्ट थे। वे कहने लगे कि यदि कल्याण आश्रम नहीं होता तो पता नहीं उनके साथ क्या होता। कल्याण आश्रम ने सभी शरणार्थी शिविरों में भोजन, स्वास्थ्य के अलावा शिक्षा की भी व्यवस्था की थी। शिक्षा की दृष्टि से कुछ बालबाड़ियां शुरू की गयी थीं। उस पूरी चर्चा के दौरान बुंगा के साथ आए दो लोग कहने लगे कि भास्कर राव जी, हम कब तक ऐसी स्थिति में रहेंगे, अब तो हमें शस्त्र उठाना पड़ेगा। जैसे ही उन्होंने ऐसी बात कही, भास्कर राव ने कहा, "नहीं, यदि आप इस पथ पर गये तो इसमें आपका ही अहित होगा और आपको समर्थन नहीं मिलेगा। ऐसा हुआ तो कल्याण आश्रम भी आपका साथ नहीं देगा। आप यदि शांतिपूर्ण तरीके से बिना शस्त्र उठाये अपनी समस्या के लिए संघर्ष करेंगे तो पूरा देश आपके साथ खड़ा रहेगा।" इस प्रकार भास्कर राव ने ऐसे युवाओं को भी सही मार्ग दिखाया जिन्हें लगता था कि अत्याचार और अन्याय के खिलाफ शस्त्र उठाना पड़ेगा। रियांग समाज ने बाद में उनकी सलाह का अनुसरण किया। संगठन के मत को उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के दृढ़तापूर्वक उन्हें बताया।

पवित्र आत्मा

5 दिसम्बर, 2001 के उस दिन को मैं भूल नहीं सकता।

मैं भास्कर राव के सामने बैठा हुआ था। उन्होंने मुझे पूछा कि कल्याण आश्रम का मूल क्या है? मैंने कहा श्रद्धा जागरण। उनके चेहरे पर संतोष के भाव थे। मेरी संगठन मंत्री के रूप में घोषणा हो ही गयी थी। उन्होंने अपने गले की एक रूद्राक्ष की माला उतार कर मुझे दी। उसके बाद 12 जनवरी, 2002 यानि एक महीना दस दिन बाद उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया।

हर कार्यकर्ता की संभाल

कार्यकर्ताओं का मत-विमत रहता ही है, परन्तु वे किसी के प्रति पूर्वाग्रही नहीं थे। यदि किसी कार्यकर्ता ने विपरीत मत दिया है तो भी उसे उसकी योग्यतानुसार काम देना चाहिए यह उनका मत रहता था। कई बार संगठन में काम करते हुए कार्यकर्ता से गलती हो जाती है। मनुष्य की दुर्बलताएं रहती हैं, जिसके कारण कार्यकर्ता यदि गलत कदम उठा लेता है तो ऐसे भी कार्यकर्ताओं को उन्होंने संभाला। कभी किसी कार्यकर्ता को पारिवारिक परिस्थितियों के कारण घर वापस जाना पड़ता है और कभी उसके स्वभावदोष के कारण उसे घर भेजना पड़ता है। ऐसी दोनों ही परिस्थितियों में कार्यकर्ता को संभालने में वे सिद्धहस्त थे। कार्यकर्ता पारिवारिक परिस्थितियों में घर वापस गया है तो उस स्थिति में उसकी क्या मदद करनी चाहिए और जिसे स्वभावदोष के कारण घर वापस भेजा गया है तो वह भी अपना बंधु है। उसके कारण संगठन को नुकसान नहीं होना चाहिए, इसलिए उसे पहले दायित्व से मुक्त करना और फिर उसके बाद उसकी सब प्रकार से चिंता करना। उसने संगठन के लिए अपना समय तो दिया ही है, इसलिए उसे मझधार में कैसे छोड़ा जा सकता है? ऐसे कई कार्यकर्ताओं को उन्होंने सैटल करवाया और उनके विवाह करवाए और सुनिश्चित किया कि उनकी गृहस्थी सही प्रकार से चले। ऐसी दृष्टि, आत्मीय भाव और सैटल करने तक उसकी संभाल करने का भाव सचमुच दुर्लभ है।

डॉ. हेडगेवार के दर्शन

हमारे लिए यह सौभाग्य की बात है कि संघ संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी को देखने का अवसर भास्कर राव को मिला। भास्कर राव के मन में इच्छा रहती थी कि डाक्टर साहब आएंगे तो उनके साथ रहने का अवसर मिलेगा। वे पैदल ही डॉ. साहब के साथ घूमते थे। जब हम उनसे पूछते कि डाक्टर जी के बारे में कुछ बताइए, तो उनकी आंखें नम हो जाती थीं। डॉ. साहब का स्मरण करते ही वे श्रद्धावनत हो जाते थे। वे कहते थे डॉ. हेडगेवार ने कभी नहीं कहा कि यह करो। उन्होंने स्वयं अपने आचरण से करके दिखाया। वही भास्कर राव ने उनसे सीखा।

निर्मल अन्त:करण

इस प्रकार भास्कर राव का एक तपोमय जीवन रहा जिसने कल्याण आश्रम को एक सुदृढ़ सांगठनिक आधार प्रदान किया। संगठन में जनजातीय बंधुओं के हितों में नये आयाम प्रारंभ किये। कार्यकर्ताओं को नये-नये प्रयोग करने की उन्होंने पूरी स्वतंत्रता प्रदान की। जो सहयोग करने वाले हैं उनके प्रति भी एक आत्मीय व्यवहार रखते हुए उन्हें सिर्फ सहयोगकर्ता नहीं बल्कि वे हमारे निकटतम सहयोगी बनकर खड़े हों, ऐसा उन्होंने प्रयास किया। उनका ऐसा बहुमुखी व्यक्तित्व रहा। सच पूछिए तो एक निर्मल अन्त:करण के वे कार्यकर्ता रहे। मुझे उनका सान्निध्य मिला इसलिए मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली मानता हूँ। हृदय की पवित्रता, किसी के प्रति पूर्वाग्रह न पालना, परिस्थति का सम्यक् आंकलन करना, तदनुकूल मार्गदर्शन करना, आत्मीय भाव, नये प्रयोग करने की छूट कार्यकर्ताओं को देना और विशेषकर महिलाओं के प्रति संवेदनशीलता रखना यह भास्कर राव से हमने सीखा है। ❑

(लेखक अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के संगठन मंत्री रहे और अनेक वर्षों तक स्व. भास्कर राव के साथ काम किया)

जिनकी प्रभा से निकले हजार सूरज

तरुण विजय
पूर्व राज्य सभा सांसद

हिंदू धर्म की सनातन अग्नि को जलाए रखने में हिंदू सम्राटों के साथ-साथ संतों और संत समान उन समाज शिल्पियों की बड़ी भूमिका रही है, जिन्होंने अनाम,अनजान रहते हुए अपने रक्त से हिंदू धर्म का उपवन सींचा। भास्कर राव ऐसे ही सूर्य थे। सूर्य तो उनके नाम में ही निहित था लेकिन उनका व्यक्तित्व और कृतित्व सूर्य की असंख्य रश्मियों को शांत, मृदुल आत्मीयता में बदल दिया करता था। भास्कर राव स्वयं प्रभा से उद्भासित थे। उन्होंने अपने तेज और तप से हजारों घरों को समर्पित संघ कार्यालय में ही बदल दिया और हजारों युवाओं को स्वयंसेवकत्व की दीक्षा देकर पाश्विक और बर्बर वामपंथी हिंसा के विरुद्ध चट्टान की तरह खड़ा कर दिया।

भास्कर राव जी ने केरल जैसे राज्य में संघ कार्य को आगे बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाई थी। उनके कारण ही केरल में कार्यकर्ताओं की ऐसी टोली खड़ी हो पाई,जो वामपंथी आतंकवाद का मुकाबला आज भी करती है

कुछ समय पहले सोशल मीडिया पर केरल के मास्टर सदानंदन की बेटी यमुना भारती की चर्चा हुई। कक्षा में पढ़ाते समय सदानंदन जी को वामपंथी आतंकवादियों ने अपने हमले का शिकार बनाया और उनके दोनों पांव काट दिए। वे किसी तरह बचे। उन्होंने एक स्वयंसेवक की चट्टानी दृढ़ता दिखाते हुए अपने परिवार को पाला-पोसा। उन्हीं की बेटी यमुना भारती ने कालीकट विश्वविद्यालय की सिविल इंजीनियरिंग परीक्षा में प्रथम क्रमांक, जिसे 'फर्स्ट क्लास फर्स्ट' कहा जाता है,हासिल कर अपने पिता पर हमले का मानो विद्या-वीरता से प्रतिशोध ले लिया। कौन हैं सदानंदन मास्टर!वे और उनके जैसे अनेक कार्यकर्ता भास्कर राव द्वारा केरल में रचे गए संघ संसार की देन हैं। ऐसे एक नहीं अनेक,अनेक नहीं अनेकानेक ज्ञात,अल्पज्ञात और प्राय:अज्ञात उदाहरण हैं। अगर भास्कर राव एक सूर्य थे तो उनकी सबसे बड़ी देन,इस भारत और भारत की हिंदू सभ्यता की रक्षा के निमित्त कवच समान युवाओं को गढ़ने के रूप में यह कही जा सकती है कि एक भास्कर ने हजार भास्कर निर्मित किए।

उनको जानना अपने से मिलने जैसा होता था। शांत, शीतल, मंद समीर या भास्करराव। हमें हमेशा दोनों एक जैसे ही लगे। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी उनका सौम्य चेहरा कभी व्यग्र या उद्विग्न नहीं होता था। संघ कार्य उनके जीवन के रोम-रोम में बसा था। पर कभी किसी भी क्षण,किसी भी कार्यकर्ता का अगर मन उदास है,उसकी कोई व्यथा है या उस पर कोई पारिवारिक संकट भी आन पड़ा है तो भी उस घर के रक्त बंधु सदस्य के नाते ही उन्होंने समाधान का प्रयास किया। यह कहकर कभी पीछे नहीं हटे कि भाई मैं तो संघ प्रचारक हूं,आपकी इस समस्या से मुझे सहानुभूति है पर मैं कुछ कर नहीं सकता।

संघ को समझना है तो उसे अपनत्व के संबंधों से समझना होगा। ग्रंथ,बौद्धिक और कार्यक्रम तो बाद में आते हैं और वास्तव में ग्रंथ,बौद्धिक और कार्यक्रम मूलत:उस अपनत्व के धागे बनाने के लिए ही किए जाते हैं जिसे हिंदू संगठन भी कहा जाता है। यही वह अपनत्व

था जिसने केरल में सामान्य आर्थिक दृष्टि से विपन्न, मजदूरों, किसानों, मछुआरों, अध्यापकों, रिक्शा चालकों, बिजली और अन्य सामान्य मरम्मत करने वालों के बीच संघ का काम प्रारंभ करवाया। केरल में भास्कर राव संघ के प्रचारक,अधिकारी के नाते नहीं, बल्कि किसी के भाई,किसी के पिता समान, किसी के अनुज, किसी के मामा या चाचा बन गए थे। वे सबके घरों के सदस्य थे, जो शाखा भी जाते हैं, न कि शाखा जाने के लिए बाध्य करने वाले। पर यह फर्क था भास्कर राव और सामाजिक संगठन के नाते संगठन करने वाले अन्य नेताओं में।

संघ में एक शब्द का प्रयोग होता है-एकरूपता। जब साधक और साध्य एक हो जाएं, जब पथ और पथिक एक हो जाएं, जब कारवां और मंजिल एक-दूसरे में समा जाएं कि न मंजिल का भान हो, न कारवां मंजिल से अलग दिखे तो उस स्थिति को स्वयंसेवकत्व प्राप्त होना कहते हैं। भास्कर राव उस स्वयंसेवकत्व की स्थिति के मूर्तिमंत स्वरूप थे।

1984में वे वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री घोषित हुए थे और 1986 में अखिल भारतीय संगठन मंत्री बने। केरल से राष्ट्रीय स्तर पर जनजातीय समाज के संगठन, शिक्षा और आर्थिक विकास,धर्म जागरण तथा अहिंदू षड्यंत्रों से उनकी रक्षा का एक बड़ा और भिन्न प्रकार का दायित्व उनको मिला। वह भी किस आयु में-जब वे 65 वर्ष के हो गए थे। यह वह आयु होती है,जब जीवन एक निश्चित गति को प्राप्त हो चुका होता है। पथ निर्धारित होता है और शेष वर्ष आराम से निकालने का मन होता है। लेकिन 65 वर्ष की आयु में भास्कर राव जी को मानो वह एक नया दायित्व और अध्याय रचने का काम दिया गया। उन्होंने वनवासी कल्याण आश्रम को वह सब कुछ दिया, जो 25 और 35 वर्ष के युवा कार्यकर्ता एक नवीन संगठन को दे सकते थे। नई दिशा, नई योजनाएं, नए कार्यकर्ताओं को जोड़ना और सेवा, शिक्षा तथा आर्थिक विकास के कार्यक्रमों के साथ-साथ अपने धर्म और संस्कृति को बचाने के लिए उसी लौह दृढ़ता का समावेश, जो केरल के प्रथम प्रांत प्रचारक के रूप में दिखाई थी।

मैं तब दादरा नगर हवेली में था, वनवासी कल्याण आश्रम के पूर्णकालिक के रूप में। 1981 से 1986 तक। 1986 सितंबर में पाञ्चजन्य में आया कार्यकारी संपादक के नाते। कल्याण आश्रम में और उसके बाद पाञ्चजन्य में भास्कर राव से निरंतर संपर्क रहा। उनके साथ पत्र-व्यवहार, मिलना सतत् चला। दिल्ली आने पर पहले वे झंडेवालान कार्यालय में रुकते थे। बाद में उन्होंने वनवासी कल्याण आश्रम के मलकागंज कार्यालय में ही रुकना शुरू किया। प्राय: दिल्ली आगमन पर एक समय भोजन हमारे यहां अवश्य रहता था। काम की बात नहीं, सिर्फ घर की बातें। उस समय 'वनबंधु' को कुछ नए पन के साथ छापने का उनका मन था। पाञ्चजन्य में काम करते हुए उन्होंने मुझे 'वनबंधु' के संपादक का भी दायित्व दिया। हमने कुछ समय दिल्ली से वारली शैली की चित्रकला वाले शुभकामना पत्र बनाकर भेजने और विक्रय करने प्रारंभ किए। उन्हें मेरी माताजी की बहुत चिंता रहती थी। उनकी आंखों के दो ऑपरेशन हो चुके थे और वे देहरादून में अकेली रहती थीं। पूज्य रज्जू भैया ने अम्मा के पास भास्कर राव जी से कह कर असम से पहले दो और फिर अगले साल पांच वनवासी छात्र देहरादून में पढ़ने भेजे, ताकि वे बच्चे पढ़ें भी और अम्मा का अकेलापन भी दूर हो। उसी काम को आगे बढ़ाकर भास्कर राव जी ने देहरादून में वनवासी छात्रावास और विद्यालय प्रारंभ करने में मदद दी,जो आज 20 साल हो गए सतत गतिमान है। भास्कर राव

इस प्रकार कार्यकर्ताओं का संसार रच देते थे।

उनका जन्म 5 अक्तूबर, 1919 को तत्कालीन बर्मा की राजधानी रंगून के निकट दास गांव में हुआ था। वहां उनके पिता शिवराम कलंबी चिकित्सक थे। मूलत:भास्कर राव का वंश यानी कलंबी परिवार गोवा के मंगेशी गांव से है। इसी गांव से लता मंगेशकर का परिवार है जहां मंगेश देव का प्राचीन मंदिर है। भास्कर राव की प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा म्यांमार में हुई थी। काल की गति ऐसी कि बचपन में ही माता-पिता का देहांत हो गया। अत:शेष शिक्षा मुंबई के राबर्ट मनी हाई स्कूल और सेंट जेवियर्स कॉलेज से प्राप्त की। कुछ समय नौकरी करने के बाद 1945 में उन्होंने बंबई विश्वविद्यालय से एल.एल.बी की उपाधि हासिल की। वे बचपन से ही स्वयंसेवक थे। परमपूज्य गुरुजी,भाऊराव देवरस और दत्तोपंत जी के संपर्क में रहने के कारण 1946 में वे संघ के प्रचारक बन गए और उन्हें उस समय संघ कार्य के लिए असंभव माने जाने वाले केरल में संघ कार्य बढ़ाने का दायित्व दिया जहां दत्तोपंत ठेंगड़ी जी ने संघ कार्य को गति दी थी।

भास्कर राव जी निरंतर प्रवास करते तथा वनवासी क्षेत्रों में हर क्षेत्र और हर प्रकल्प को स्वयं देखते और दिशा देते थे। उनका स्वास्थ्य पहले से ही गिरावट की ओर था। हृदय रोग के कारण शनै: -शनै:उनकी गति और शक्ति पर असर पड़ने लगा और फिर अचानक डॉक्टरों ने पाया कि उन्हें कैंसर है। दैवेच्छा के आगे किसकी चली है। 12 जनवरी, 2002 को केरल के एर्नाकुलम में उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया। केरल प्रारंभ से उनकी कर्मभूमि रही और उन्होंने अंतिम प्रयाण भी केरल की माटी को नमन करके किया। भास्कर राव हमारे समय के महात्मा ही थे। जिन्होंने गांधीजी और दीनदयालजी को नहीं देखा, उन्होंने भास्कर राव की छवि में गांधी और दीनदयाल दोनों को पाया। ❑

शोक संवाद.....

अर्जुनदास खत्री का दु:खद निधन

वनवासी कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय कोषाध्यक्ष तथा कानपुर के प्रसिद्ध व्यापारी आदरणीय अर्जुनदास खत्री अचानक हम सबको छोड़ कर परलोकवासी हो गए। आप कई वर्षों से संघ के संघचालक के रूप में भी कार्यरत थे।

मुम्बई में स्नेहीजनों को मिलने आए थे और अचानक दिल का दौरा पड़ने से आपकी दु:खद मृत्य हो गई। जैसे ही जानकारी मिली परिवार सहित वनवासी कल्याण आश्रम के हम सभी के लिए यह एक आघातजनक समाचार था। कुछ समयपूर्व उन्हें गहन चिकित्सा हेतु वेदान्ता अस्पताल-गुरूग्राम में दाखिल किया था परन्तु उसके बाद वे पूर्ण स्वस्थ दिखाई दे रहे थे। सहजरूप में सभी काम करते थे। अर्जुनदास जी ऐसे अचानक हमारे बीच से चले जाएंगे ऐसा किसी ने सोचा तक नहीं होगा। उनके स्नेहपूर्ण स्वभाव के कारण वनवासी कल्याण आश्रम की बैठकों में एक खालीपन अनुभव होगा। साथ-साथ कानपुर के छात्रावास के बालकों सहित सभी कार्यकर्ता एक अभिभावक की अनुपस्थिति का अनुभव करेंगे जो असहनीय होगा। परन्तु परमात्मा की लीला के सामने हम तो केवल दर्शक हैं। अर्जुनदास जी की पवित्र आत्मा को परमात्मा सद्गति प्रदान करे और परिवारजनों सहित सभी को दु:ख सहन करने हेतु शक्ति दे। ❑

माननीय भास्कर राव : कुछ संस्मरण

डॉ. प्रसन्न दामोदर सप्रे
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.वनवासी कल्याण आश्रम

- माननीय भास्करराव एक कुशल संगठक, कर्मठ, दूरदर्शी और योजक कार्यकर्ता थे। साथ में एक श्रेष्ठ लोक-संग्रहक थे। उनके पिताजी चिकित्सक थे। उन दिनों म्यांमार (ब्रह्मदेश) और श्रीलंका भारत में ही समाविष्ट था। पिताजी ब्रह्मदेश में शासकीय सेवा में चिकित्सक के नाते कार्यरत थे। ब्रह्मदेश में उनका देहांत हो जाने पर परिवार मुंबई में स्थानांतरित हो गया। यहीं पर भास्करराव की शेष पढ़ाई हुई। मुंबई में वे संघ-शाखा में जाने लगे। संघ-संस्थापक परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जब मुंबई आते थे तो वे मार्गदर्शक के नाते महत्वपूर्ण व्यक्तियों को मिलने के लिए निकलते थे। डॉक्टर साहब की छोटी थैली भास्कर राव जी के हाथ में रहती थी। महानगर की सड़कों पर साथ में चलना, कार्यकर्ताओं-स्वयंसेवकों से मिलने के लिए उनके निवास स्थानों पर जाना, वार्तालाप सुनना और करना आदि होता था। स्वाभाविक रूप से डॉक्टर साहब की इन सारी बातों का प्रभाव संवेदनशील भास्कर राव पर सहज रूप से हुआ। डॉक्टर साहब के सारे गुणों को भास्कर राव प्रभावित होकर ग्रहण करते गए। डॉक्टर साहब की यही विशेषता थी। यह सब सहज रूप से होता गया। अत: भास्कर राव भी डॉक्टर साहब के समान अजातशत्रु, अथक कार्यकर्ता, कुशल संगठक, सबके ऊपर प्रेम बरसाने वाले हो गए। भास्कर राव भी आगे डॉक्टर साहब के समान अनुयाइयों के लिए मार्गदर्शक और संकट -निवारक हो गए। मा. भारकरराव पत्र लेखन का कार्य रात्रि में करते थे। मध्यरात्रि तक पत्र लेखन का कार्य चलता था। पत्र लिखते समय प्राय: रेडियो में आने वाला शास्त्रीय संगीत सुनते थे।
- सारी परिस्थितियों को देखे, समझे और अनुभव किए बिना भास्कर राव कभी भी मार्गदर्शन नहीं करते थे। वे जब कल्याण आश्रम का कार्य करने के लिए आए इसके पूर्व भी मैंने उनकी ख्याति सुनी थी। उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र या मध्य प्रदेश से केरल प्रांत बहुत छोटा होने पर भी उन प्रांतों से केरल में सघ शाखाओं की संख्या काफी अधिक थी। शाखाओं में बड़ी संख्या में अत्यंत निम्न मध्य वर्ग और पिछड़े गरीब वर्ग के लोग भी जुड़े। इसका श्रेय हम भास्कर राव जी को दे सकते हैं। केरल का समुद्री तट बहुत बड़ा है। अत: मछुआरे बड़ी संख्या में हैं। संघ की पैठ इस समुदाय में भी व्यापक रूप से है। केरल में जब संघ कार्य अल्प था तब जिन क्षेत्रों में हिन्दू समुदाय अल्पसंख्यक हो गया था वहां पर उनको सम्मानपूर्ण जीवन बिताना भी कठिन हो गया था। परंतु ऐसे क्षेत्र में जब संघ कार्य मजबूत हुआ तो सामाजिक स्थिति में बदलाव आया। हिन्दुओं का जीवन सुगम हुआ। कम्युनिस्टों की खूनी राजनीति का प्रतिकार भी संघ मजबूत होने पर होने लगा। ऐसा व्यापक

सामाजिक बदलाव लाने में भास्कर राव जी की कार्य प्रणाली एवं नीतियाँ सफल हुई। एक सामाजिक कार्यकर्ता का उद्देश्य ही समाज में वांछित बदलाव लाना होता है। अत: वे एक सफल सामाजिक कार्यकर्ता के नाते आदर्श रूप से हम सबके सामने आ सके।

- मा. भास्कर राव 1984 में वनवासी कल्याण आश्रम के कार्य में आये। प्रारंभिक लगभग दो वर्षों तक उन्होंने भारत के सभी वनवासी क्षेत्रों में, सभी प्रांतों में व्यापक रूप से प्रवास किया। वनवासी समाज को एवं आश्रम कार्यकर्ताओं को अच्छी तरह से समझने का प्रयास किया। इस कालखंड में वे सभी से वार्तालाप तो करते थे परंतु मार्गदर्शन हेतु बौद्धिक प्राय: नहीं देते थे। गहराई से संपूर्ण परिस्थिति का अध्ययन करने के बाद ही वार्तालाप एवं संक्षिप्त बौद्धिकों में वे मार्गदर्शक सुझाव देने लगे। कल्याण आश्रम के कार्य में विभिन्न आयाम जुड़ते गए और कार्य का द्रुतगति से विकास होता गया।
- अरुणाचल प्रांत में आश्रम-कार्य बढ़ने लगा। परंतु 1980 के दशक के प्रारंभ से ही ईसाई मिशनरियों का अरुणाचल प्रदेश में मतांतरण का कार्य जोर-शोर से हो रहा था। वहां पर परंपरागत पूजा पद्धति, धर्म-संस्कृति को मानने वाला स्थानीय वनवासी नेतृत्व; क्या करना चाहिए, कौन सा उपाय करना चाहिए, इस मुद्दे पर असमंजस में था। तब अरुणाचल के अपने प्रांतीय संगठन मंत्री ने प्रांत के स्थानीय व्यापक सामाजिक नेतृत्व वाले महत्वपूर्ण दो-चार व्यक्तियों से विचार-विमर्श-परामर्श करने के लिए मा. भास्कर राव जी को अरुणाचल में बुलाया। सबके साथ गहन चर्चा हुई। भास्कर राव जी ने परामर्श दिया कि ईसाई समुदाय सप्ताह में एक बार चर्च (श्रद्धा स्थान) में एकत्रित होता है और अपने संप्रदाय का विस्तार हो इसके लिए योजनाबद्ध रूप से आगे बढ़ता है। हमारे परंपरागत धर्म-श्रद्धा-संस्कृति वाला समाज भी एक श्रद्धा स्थान पर नियमित अंतराल में, साप्ताहिक रूप से एकत्रित होने लगे और संगठित रूप से विचार-विमर्श करने लगे और तदनुसार कार्य करने लगे तभी समाज की रक्षा होगी। ऐसे श्रद्धा केन्द्र का अभाव है तो उसका निर्माण करना पड़ेगा और वहां प्रतीक रूप में सर्वोच्च मान्य देवता का रूप निर्धारण समाज के पुजारियों को एकत्रित होकर करना होगा जिससे वह सबको स्वीकृत हो। इस सुझाव को सबने स्वीकृत किया। समाज के मुख्य देवता डोनी पोलो (चन्द्र-सूर्य) के स्वरूप का बाद में निर्धारण किया गया एवं तदनुसार स्थान-स्थान पर, गांव-गांव में, डोनी पोलो मंदिरों का निर्माण होने लगा। धर्म-श्रद्धा-संस्कृति पर आस्था का दृढ़ीकरण हुआ। निर्धारित दिन पर एकत्रीकरण होने से समाज भी संगठित होने लगा। यह केन्द्र परंपरागत धर्म-संस्कृति-श्रद्धा का मजबूत रक्षा कवच बन गया। यह सामाजिक देन भास्कर राव के कारण संभव हुई।
- भास्कर राव के व्यक्तित्व की यह विशेषता थी कि कार्य क्षेत्र में समस्या निर्माण हो जाने पर वे स्वयं जाते थे। समस्या से अवगत होते थे, उसका निदान बता देते थे और आवश्यक रहा तो उस पर चर्चा भी करते थे। यदि समस्या कार्य क्षेत्र की न होकर दो कार्यकर्ताओं

(संगठन के अंदर के ही या एक बाहर के) में हो जाए तो निपटाना कठिन हो जाता है; ऐसा देखा जाता है। स्वभाव वैचित्र्य या विचार अलग होने पर ऐसा होता है। परंतु भास्कर राव ने ऐसी समस्याओं का निराकरण कुशलता से किया है। दोनों पक्ष संतुष्ट हो जाते थे।

- भास्कर राव ने वनवासी कल्याण आश्रम का कार्य करने के लिए अनेक संघ स्वयंसेवकों को तैयार किया है और उनको सुदूर स्थानों पर भी भेजा है। केरल प्रांत उनका वर्षों तक कार्यक्षेत्र रहा है, अत: वहां से बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं को भेजा। भास्कररराव प्रचारक के नाते घर छोड़कर केरल में गए तो प्रांतीय प्रचारक ने उनको सूचना दी थी कि पुर्तगालियों के अत्याचारों के कारण गोवावासी केरल में बड़ी संख्या में बस गये थे। भास्कररराव मूल रूप से गोवा के थे। अत: उनकी भाषा भी कोंकणी थी। अत: उनसे संपर्क करना टालकर स्थानीय मूल-वासियों से ही संपर्क करते रहे। ऐसा करने से ही कार्य की जड़ें गहराई तक गई। भास्कर राव ने इस सूचना का परिपालन कई वर्षों तक किया। इसके कारण केरल में कार्य विस्तार व्यवस्थित रूप से हो सका। उनकी भाषा, वेश-भूषा, खान-पान सब केरलवासियों के समान ही हो गया। हजारों केरलवासी उनके व्यक्तिगत घनिष्ठ संपर्क में आए और उनसे प्रेरणा पाकर कार्यकर्ता हुए और संघ-प्रचारक हुए।

वास्तव में सभी दृष्टिकोण से देखा जाए तो मा. भास्कररराव कार्यकर्ताओं के लिए अनुकरणीय आदर्श कार्यकर्ता थे। उनसे हमें कार्य में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा पाथेय मिल सकता है। ऐसी विभूति को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम ❑

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि

माधवी जोशी
अ.भा. महिला प्रमुख

यह वर्ष माननीय भास्कर राव का जन्म शताब्दी वर्ष है। उनके सान्निध्य की अनेक घटनाएं मेरी स्मृति में हैं। 15-16 वर्ष देश भर में निरन्तर प्रवास में उनका स्नेह, प्रेम, कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन, प्रेरणा देना, कार्यकर्ताओं की चिंता करना आदि अनेक गुणों का अनुभव सब कार्यकर्ताओं को हुआ। महिला प्रमुख के नाते से मुझे उनके व्यक्तित्व के अलग पहलू का भी अनुभव हुआ। मा. भास्करजी आवश्यकता पड़ने पर अत्यंत कठोर निर्णय लेते थे और ऐसे निर्णय तुरंत लेते थे, यह उनकी विशेषता थी।

कल्याण आश्रम का कार्य महिला-पुरुष सभी एक साथ मिल कर करते हैं। कभी-कभी किसी पुरुष कार्यकर्ता का गरिमापूर्ण व्यवहार न होने के कारण हम उसके बारे में मा. भास्करजी के सामने खुलकर बताते थे। वे इस पर अविलंब निर्णय लेकर उस व्यक्ति को कार्यमुक्त कर देते थे। कार्यमुक्त करके छोड़ नहीं देते थे वरन् उसके भविष्य की चिंता कर सारी व्यवस्था करते थे। जहाँ गलत हुआ वहाँ तुरंत निर्णय करने के उनके स्वभाव के कारण सब बहनें आश्वस्त होकर कार्य करती थी। यहाँ घटना का विवरण देना उचित नहीं है, इसलिए लिख नहीं रही हूँ। **'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि'** यह उक्ति मा.भास्करजी के जीवन पर सटीक बैठती है। उनको मेरा प्रणाम। ❑

माननीय भास्कर राव वनवासी सेवा में

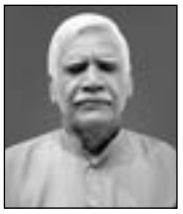

कृपा प्रसाद सिंह, उपाध्यक्ष
अ.भा.वनवासी कल्याण आश्रम

अप्रैल 1985, रांची में विराट वनवासी सम्मेलन का आयोजन काके रोड पर हुआ। इस सम्मेलन में दिल्ली के प्रांत संघचालक मा. लाला हंसराज गुप्त व मा. रज्जु भैया, सरकार्यवाह मुख्य अतिथि थे। जशपुर से मा.दिलीप सिंह जूदेव, राजकुमार, जशपुर राजपरिवार (तथा सांसद व भारत सरकार के मंत्री बाद में) विशिष्ट अतिथि थे। इस विराट वनवासी सम्मेलन में 2100 परिवार की घर वापसी हुई थी। दिलीप सिंह जूदेव व स्वामी अमरानंद को वनवासी समाज का यह दल वापस सनातनी धर्म में आना चाहता था। सार्वजनिक आह्वान स्वीकार करने के कारण ये सभी महानुभाव इस विराट वनवासी सम्मेलन में आमंत्रित थे। हवन यज्ञ व कानूनी प्रक्रिया पूरी होने के पश्चात् सार्वजनिक सभा में इनको सामाजिक तौर पर स्वीकार करने का कार्यक्रम था। मंच संचालन हेतु मा. गुणवंत सिंह जी व मा. महरंग उरांव मंच पर माइक के पास थे। कई घोषणाओं में मा.भास्कर राव का परिचय मा. बालासाहब देशपांडे ने अ.भा. सह संगठन मंत्री, केन्द्र मुंबई के रूप में कराया। सभा में खुशी की लहर दौड़ गयी। जबरदस्त करतल ध्वनि व भारत माता की जयकार के साथ मा.भास्कर राव का स्वागत सर्वप्रथम सभा में किया गया। मोरेन सिंह पुरती, अध्यक्ष, वनवासी कल्याण केन्द्र व श्री जगत नन्दन प्रसाद ने शाल व श्रीफल से मा.भास्कर राव का स्वागत किया। कल्याण आश्रम के लिए यह एक सुखद क्षण था। पहली बार किसी सह संगठन मंत्री की घोषणा वह भी 10 हजार वनवासी बंधुओं की सभा में हुई। मा. रज्जू भैया (प्रो. राजेन्द्र सिंह) व मा.लाला हंसराज जी ने अपने उद्‌बोधन में मा. भास्कर राव को वनवासी सेवा में यशस्वी होने का आशीर्वाद दिया। वहीं इसी मंच पर मा. बाला साहब ने वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता के रूप में उनका स्वागत किया।

1985 में कल्याण आश्रम के और 2 विशेष कार्यक्रम हुए। अ.भा.महिला सम्मेलन दुर्ग में व अ.भा. कार्यकर्ता सम्मेलन, ऋषिकेश में। इन दोनों सम्मेलनों में मा. भास्कर राव मा. बालासाहब देशपांडे व मा. मिश्रीलालजी तिवारी के साथ सभी कार्यक्रमों का विचार करते हुए दिखे। भिलाई के अ.भा. महिला सम्मेलन में श्रीमती अरुणा अनिल होलसमुद्र ने प्रसिद्ध महिला समाजसेवी अनुताई वाघ, नागालैण्ड की स्वतंत्रता सेनानी रानी मां गाइदिल्यू, सरकार्यवाह रा.स्व.संघ प्रो राजेन्द्र सिंह को आमंत्रित किया था। प्रथम महिला सम्मेलन में मा. भास्कर राव कहीं मंच पर सामने नहीं दिखे। अरुणा जी, अनिल जी, व श्री द्वारिकाचार्य तथा दुर्ग के कार्यकर्ता मंडली के साथ हर व्यवस्था का बारीकी के साथ विचार करते दिखे। ऋषिकेश के अ.भा.सम्मेलन में डॉ. लोकमन सिंह व मा.तिलक राज कपूर के साथ सितंबर के अंतिम सप्ताह में पहले ही पहुँच कर व्यवस्था आदि करते दिखे। मैं व्यवस्था में था। मैने देखा मा. बालासाहब देशपांडे, मा.मिश्रीलाल तिवारी मा. वसंतराव भट्ट, मा. रामभाउ गोडबोले, मा.बालासाहब हरदास, मा. भास्करन जी साथ में मा.श्रीधर जी, मा.अवधबिहारी

जी व मा. गुणवंत सिंह जी अक्सर बैठकर विचार विमर्श किया करते थे। इस टोली में मा.मोरूभाउ केतकर भी सदैव उपस्थित रहते थे। ऋषिकेश के कई व्यवस्थात्मक बैठकों में व भिलाई के महिला सम्मेलन की व्यवस्थाओं में मा. सप्रे जी को अक्सर बैठकों में देखा। अ.भा. मंत्री होने के नाते कई बैठकें लेते भी मैने देखा।

1986 में एक सम्मेलन नागपुर में आयोजित हुआ था। मा. बालासाहब हरदास व मा. भास्करन जी दोनों डॉ. हेडगेवार भवन में ही ठहरे थे। मा. रामभाउ गोड़बोले विदर्भ के अध्यक्ष एडवोकेट पी. देवपुजारी के यहां ठहरे थे। उन्ही के यहां इस टोली को बैठते विचार करते मैने देखा। 1987 के अ.भा. इन्दौर सम्मेलन में मा. भास्कर राव व मा.रामभाउ गोडबोले इन्दौर सम्मेलन में मुझसे अ.भा.युवा प्रमुख के नाते कार्य देखने का प्रस्ताव रखा एवं सम्मेलन में इसकी घोषणा भी हुई। अ.भा.स्तर पर देशभर में युवा सम्मेलनों का आयोजन होने लगा। कल्याण आश्रम के कार्य से युवा कार्यकर्ताओं का जुड़ाव आवश्यक है, ऐसा आग्रह मा. भास्करन जी व मा. बालासाहब देशपांडे जी का था। विधार्थी परिषद के कार्य में 1968 से 1980 तक रहने के कारण मुझे इसमें थोड़ी सहूलियत हुई। दो वर्ष के इस कार्य के कारण श्री अशोक साठे से मा. रामभाउ गोडबोले ने मुझे मिलाया। अशोक जी पुणे के एक विद्यालय में खेलकूद के शिक्षक थे।

1988 के अंतिम दिनों में मुंबई में खिलाड़ियों को एकत्रित आने की योजना बनने लगी। अंतत: 28,29,30,31 दिसंबर व 1 जनवरी 1989 की तिथि मुंबई के उन दिनों के कार्यालय प्रमुख श्री भरत आसर तत्कालीन मेयर श्री रामप्रभु को मिलने व कार्यक्रम की योजना समझाने पहुँचे। डोम्बीवली स्टेडियम उपलब्ध कराने का आश्वासन श्री रामप्रभु ने दिया। डोम्बीवली स्टेडियम में देशभर के खिलाड़ी तीरंदाज, कबड्डी, खो-खो व मैराथन धावक 405 की संख्या में एकत्रित हुए। मा. अटलबिहारी वाजपेयी, मैराथन धावक सरदार मिल्खा सिंह आदि महानुभाव उद्घाटन सत्र में उपस्थित थे। महरंग उरांव उस समय बिहार प्रांत के खेलकूद प्रमुख थे। 18 स्वर्णपदक लेकर बिहार प्रथम राज्य घोषित हुआ था। मा.भास्कर राव के साथ प्रथम राष्ट्रीय वनवासी क्रीड़ा महोत्सव में अलग-अलग प्रांतों की ग्रुप फोटोग्राफी में मा.अशोक जी, शिवाजी मैदान, दादर, समापन समारोह में दिखे। सभी दिशाओं में रेल मंत्रालय से संपर्क करके खिलाड़ियों के लिए अतिरिक्त डिब्बे लगाये गये। पानी वाले जहाज भी महाराष्ट्र के आदिवासी कल्याण मंत्री ने सभी वनवासी खिलाड़ी व कार्यकर्ताओं के लिए उपलब्ध करवाए। मुंबई विधानसभा में सभी खिलाड़ियों को भोजन पैकेट उपलब्ध कराये गये। मा. भास्कररराव के भाई व परिवार के कुछ लोग मुंबई में रहते थे उन सभी से शिवाजी मैदान, दादर में ही मिलना हुआ। उस दिन मुझे जानकारी मिली की मान्यवर भास्कर राव की प्रारंभिक शिक्षा बर्मा में हुई थी। तब बर्मा भारत देश का प्रांत होता था। भारत का नक्शा बनाते समय श्रीलंका का चित्र उचित जगह नहीं बनाने से 2 नम्बर काट लिया जाता था।

मध्यभारत के प्रवास में 1991-92 में राष्ट्रीय वनवासी क्रीड़ा प्रतियोगिता भोपाल या इंदौर में करने पर विचार करना था। मा. अवधबिहारी जी क्षेत्रीय संगठन मंत्री, श्री श्याम जी खरे सचिव, गोविंद सिंह अध्यक्ष इसके अलावा संगठन मंत्री बलराम मालवीय के साथ हर्ष चौहान, शशिकांत सेन्दूर्णीकर के साथ बैठे। बड़े शांत मन से भास्कर राव बड़े कार्यक्रमों का विचार कर लेते थे। योजना बन जाती थी। और समय पर

कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हो जाता था। इन्दौर के कार्यकर्ताओं की टोली ने द्वितीय राष्ट्रीय वनवासी क्रीड़ा महोत्सव बड़े ही व्यवस्थित व सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। म.प्र. के मुख्यमंत्री व मा.रज्जू भैया ने इस कार्यक्रम में भाग लिया था। सुन्दरलाल पटवा ने समापन समारोह में कल्याण आश्रम के इस भगीरथ प्रयास की सहारना की। पुरस्कार वितरण में मा. बालासाहब, मा.मिश्रीलाल जी, मा.मोरूभाउ केतकर, पूज्य स्वामी अमरानंद जी, तत्कालीन आदिम जाति कल्याण मंत्री श्री गणेश राम भगत ने देश भर से आये खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। समापन के पश्चात् खिलाड़ियों को 500 परिवारों में भोजन हेतु भेजने की योजना बनी। यह कार्यक्रम भी सफल रहा।

1988 के अ.भा. कार्यकर्ता सम्मेलन नासिक के पश्चात् प्रांत संगठन मंत्रियों का अभ्यास वर्ग सूर्य निकेतन, मोटारांधा, दादरा नगर हवेली में आयोजित करने की योजना मा. भास्कर राव जी ने बनायी। नासिक सम्मेलन के पश्चात् त्र्यम्बकेश्वर दर्शन करते हुए सभी प्रांत संगठन मंत्रियों ने सूर्य निकेतन के लिये एक बस से प्रस्थान किया। श्रीमान सुरेश कुलकर्णी संगठन मंत्री, श्री प्रमोद कुलकर्णी प्रांत मंत्री व मा. बालासाहब दीक्षित क्षेत्र संगठन मंत्री ने नासिक सम्मेलन, मुक्तिधाम में बड़ी अच्छी व्यवस्था की थी। इन्ही की व्यवस्था में हम सभी कार्यकर्ता सूर्य निकेतन जा रहे थे। साथ में अ.भा.अधिकारियों का दल मा. बालासाहब, मा. मिश्रीलाल जी, मा. मोरूभाउ केतकर, मा. भास्कररराव, मा.वसंतराव, मा. जगदेवराम उरांव जी एक अलग वाहन से सूर्य निकेतन आ रहे हैं। मा. प्रसन्न सप्रे, मंत्री, मा. रामभाउ गोड़बोले अ.भा. संगठन मंत्री पहले से ही व्यवस्था में लगे थे और वे पहले ही यहां पहुँच चुके थे। अशोक साठे को भी मा. रामभाऊ ने पहले ही यहां बुला लिया था। मा. भाऊराव देवरस कल्याण आश्रम के पालक अधिकारी होते थे। उनके साथ उपरोक्त टोली को विचार विनिमय के लिए बैठते मैंने देखा हैं। चूंकि इधर के क्षेत्र संगठन मंत्री मा. बालासाहब दीक्षित थे अस्तु वे भी इस टोली में विचार विनिमय हेतु बैठते थे। सूर्य निकेतन में मैंने यह दृश्य देखा है। अ.भा. संगठन मंत्री का अभ्यास वर्ग प्रारंभ हो रहा है। सूर्य निकेतन का चित्र सजाया जा रहा है। कुश के खार से एक कुटिया निर्मित हुई है।

प्रात: स्मरण सूर्य मंदिर में सामूहिक रूप से हुआ है। अब 9 बजे प्रांत संगठन मंत्री अभ्यास वर्ग का उद्घाटन सत्र है। रमेश जी पाध्ये ने व्यक्तिगत गीत गाया। माधवी जी ने शांति मंत्र का पाठ कराया। भगवान राम व भारत माता के चित्र के समक्ष मा. बालासाहब व मोरू भैया तथा मिश्रीलाल जी ने सामूहिक रूप से दीप प्रज्ज्वलन व पुष्प अर्पण किया। पूज्य ठक्कर बापा का भी चित्र लगा है उनको भी पुष्पांजली दी गयी है। मा. भास्कर राव जी ने अति संक्षिप्त प्रस्तावना इस शिविर के बारे में रखी। मा. बालासाहब ने अपने उद्घाटन उद्बोधन में अभ्यास वर्ग व सूर्यनिकेतन के बारे में मा. रामभाऊ गोड़बोले की कल्पना सबके समक्ष रखी। कल्याण आश्रम का इस प्रकार का यह पहला अभ्यास वर्ग है। सूर्यनिकेतन में भी यह पहला अभ्यास वर्ग आयोजित है। सूर्य निकेतन के उद्घाटन के कुछ चित्र अभ्यास वर्ग स्थल पर लगे हैं।

राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह, मा. भास्कररराव , सरदार गोपाल सिंह व श्री के.डी सिंह आई ए एस तथा संगठन मंत्री तरुण विजय के चित्र सबके अवलोकनार्थ लगे हैं। अभ्यास वर्ग का पहला सत्र मा. बालासाहब के उद्बोधन के साथ पूर्ण हो जाता है।

अभ्यास वर्ग में टोली की यह सोच प्रतिस्थापित हुई कि 'सूर्य निकेतन' अ.भा. वनवासी कल्याण आश्रम का प्रशिक्षण केन्द्र रहेगा। भौगोलिक दृष्टि से एक किनारे होने के बावजूद भी हम इसको स्वीकार करते हैं। आने में बहुत खर्चा है, एक किनारे पर है, देश के मध्य में नहीं है, यहाँ देखने लायक आस पास कोई प्रकल्प नहीं है, जशपुरनगर या उसके पास प्रशिक्षण केन्द्र होता तो ज्यादा सुविधाजनक होता आदि बातें महत्व की होने के बाद भी बैठकों में हम ऐसे विषय नही उठायेंगे। 'सूर्य निकेतन' मोटा रान्धा ही हमारा अ.भा. प्रशिक्षण केन्द्र रहेगा, ऐसा ही सबका मन बनायेंगे व आश्रम के प्रथम अ.भा. संगठनमंत्री का स्वप्न साकार करेंगे।

संगठन मंत्रियों का अभ्यास वर्ग सनातनी चिंतन ईको फ्रेंडली लिविंग के कॉन्सेप्ट के साथ संपन्न हुआ। क्षेत्रीय संगठन मंत्रियों के साथ ग्राम स्तर के कार्य की योजना बनी। देश भर के 82 पिछड़ी जनजातियों के लिए कार्य का आग्रह उन्होंने किया। पहले ऐसे पिछड़ी जनजातियों के विस्तृत अध्ययन का कार्य किया जाय और उनके पिछड़े रह जाने में जनजातियों की जीवन पद्वति, पूजा पद्वति व उत्सव कहीं कारण है क्या? सामाजिक कल्याण के पंडित अपने आलेख में इस बात का जमकर जिक्र करते हैं। इन प्रथाओं को कोसने में कोई कमी नहीं रखते। सभी प्रांतीय समितियाँ अपने अपने प्रांत के पिछड़े प्रिमेंटिव गुप के बारे में चयन करके उनके विकास की योजना बनाये, ऐसा सर्वमतेन निश्चय हुआ।

कल्याण आश्रम के पालक अधिकारी ने इस अभ्यास वर्ग में एक सक्षम कार्यालय के विषय पर आफिस मेनेजमेंट विषय की प्रस्तुति के लिये आये थे। यह सत्र सर्वाधिक आर्कषक रहा। सभी संगठन मंत्रियों के अलावा अ.भा. अधिकारियों ने भी इस सत्र व विषय की चर्चा में भाग लिया।

अभ्यास वर्ग में किसी विषय की प्रस्तुति के लिये मा. भास्कर राव ने कोई सत्र लिया ऐसा मेरे ध्यान में नहीं आता परन्तु सत्र लेने वाले व विषय प्रस्तुत करने वालों के साथ उनको विमर्श करते हुए मैंने अवश्य देखा। रांची में अप्रैल 1985 में जब वो आये थे तो मंच पर परिचय कराते समय उनकी जो वेशभूषा थी वही कुरता, पजामा, कंधे पर झोला, कभी-कभी दक्षिण भारत का मुण्डु यहीं उनका पहनावा अंत तक रहा। सायं शाखा पर शाखा का निकर लगाकर ही मैदान में आते थे। अंग्रेजी अखबार पढ़ने में उनकी रुचि रहती थी। पुस्तकें भी अंग्रेजी भाषा में ही अक्सर पढ़ने में उनकी रुचि रहती थी। पुस्तकें भी अंग्रेजी भाषा में ही अक्सर पढ़ते देखा, उसमें उनको सुविधा होती थी। मुझे कई बार पत्र लिखे उन्होंने, वे भी अंग्रेजी में ही आते थे। उनकी प्राथमिक पढ़ाई बर्मा में हुई थी और संभवत: अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई करने के कारण उनके लिए यह सुविधाजनक था। परंतु इसके ठीक विपरीत कार्यकर्ता बैठक में कभी अंग्रेजी नहीं बोलते थे। बैठक की भाषा हिन्दी ही होती थी।

केरल में वर्षों कार्य करने के कारण उनके जलपान व भोजन में दक्षिण भारतीय व्यंजन की प्राथमिकता देते थे। प्रवास के क्रम में सामान्य कार्यकर्ता के घर जो मिलता था उसको बड़े प्रेम से ग्रहण कर लेते थे, इस विशेष गुण के कारण वे कार्यकर्ताओं के लिये बड़े प्रिय थे। वनवासी कार्यकर्ताओं के घरों में बड़ी आसानी से रह लेते थे। अगर शौच बाहर जाना पड़े, तो उनको कोई दिक्कत नहीं होती थी। प्रवास के क्रम में, मैं उनके साथ श्री मोरेन सिंह पूर्ती। (अ. भा.उपाध्यक्ष व वनवासी कल्याण केन्द्र के प्रांतीय अध्यक्ष) के यहाँ सिंहभूमि जिले (बिहार) श्रीमान तालिम रुकबो अरुणाचल विकास परिषद् के घर पासीघाट व श्री प्रेम सिंह मार्को, अध्यक्ष महाकौशल

प्रांत मंडला म.प्र. तथा कुमारी बुधरी तांती, अ.भा. कार्यकारिणी सदस्य के घर बस्तर के प्रवास में अनुभव किया। सुदूर ग्रामीण परिवेश में रहकर भी अपनी आवश्यकता की मांग नहीं करते थे। 1990 के दशक में अरुणाचल व बस्तर दोनों क्षेत्रों में कार्य प्रारंभ हुआ। हम सभी जानते हैं प्रांरभिक काल में संगठक को कठोर परिश्रम करना होता है तब कहीं संगठनात्मक ढांचा खड़ा होता है। ऐसे समय में सहयोग करने वाले कार्यकर्ता बहुत ही कम होते है। कई बार संगठक को बगैर खाये ही सोना पड़ता है। कल्याण आश्रम में आने के पश्चात हम लोगों ने यह परिस्थिति देखी है और मा. भास्करराव ने भी देखी। अरुणाचल प्रदेश में इस काल में रात्रि भोजन व ठहरने की व्यवस्था आसानी से हो जाती थी परंतु दोपहर के समय एक स्थान से दूसरे स्थान जाने में व नये-नये परिवारों के संपर्क में समय निकल जाता था और दोपहर का भोजन करना रह जाता था। प्रांरभिक काल में हम लोग विवेकानंद केन्द्र के विद्यालय में ठहरा करते थे। अरुणाचल के प्रत्येक जिले में विद्यालय होता था वहां छात्रावास में हम ठहरते थे और भोजन करते थे। शिक्षकों के संपर्कित परिवारों से ही हम कल्याण आश्रम के कार्य में सहयोग लेते थे। विद्यालय के वार्षिकोत्सव में या अन्य उत्सवों में भाग लेकर हम अपना संपर्क बनाते थे। तेजू, रोईंग, पासीघाट, नाहरलागन, बमडिला, इटानगर,जीरो,मेघों आदि स्थानों पर ऐसे ही कार्य खड़ा हुआ था। प्रथम संगठक श्री डी. डी. आचार्य अपने झोले में भीगा चना, बादाम व मूंग रखते थे और उसी से एक टाइम का भोजन कर लेते थे। शाकाहारी होने के कारण कई जगह उन्हें काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता था लेकिन लोग उन्हें स्नेह भी उतना ही करते थे। ❑

प्रिय बसंत राव जी की स्मृतियाँ...

सुनीता जैन
कवयित्री

प्रिय बसंतराव की स्मृतियाँ, मन को झंकृत कर जायें;
रोमाञ्च हृदय में आये, श्रद्धा से हम झुक जायें ।।

थे घर में ही सन्यासी
भोगों में रही उदासी ,
दायित्व-वहन के खातिर
तृणवत् सुविधायें त्यागीं ;
माँ के आँचल के साये, भी रोक उन्हें ना पाये ।
रोमाञ्च हृदय में आये, श्रद्धा से हम झुक जाये ।।

संसाधन भले ही कम थे
पर आशायें अनगिन थीं ,
उम्मीदों के दीपक में
साहस की ज्योति प्रबल थी ;
तूँ- मैं इक रक्त की लय पर, उत्तर-पूर्वाञ्चल आये ।
रोमाञ्च हृदय में आये, श्रद्धा से हम झुक जायें ।।

बिखरे थे सारे मोती
इक सूत्र में इनने पिरोया ,
अनगढ़ कंकड़-पत्थर को
अपने हाथों से संजोया ;
राहों में फूल बिछाये, वन के अञ्चल महाकाये ।
रोमाञ्च हृदय में आये, श्रद्धा से हम झुक जाये ।।

उनका ही घोर परिश्र
सौभाग्य बना है हमारा ,
उनके दिखलाये पथ पर
चलना कर्तव्य हमारा ;
प्रिय वसंतदा के स्वर को, चलो फिर से सब दोहरायें ।
रोमाञ्च हृदय में आये, श्रद्धा से हम झुक जाये ।।

मेरा उनसे नजदीक का सम्बंध रहा

सुहास अंबादास पाठक
पश्चिम क्षेत्र छात्रावास प्रमुख

स्वर्गीय भास्कर राव जी से मेरा सम्बंध खानवेल में पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह सन् 1986 में आये थे तब से है। महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने खानवेल छात्रावास में सूर्य निकेतन का उद्घाटन किया था। कार्यक्रम के बाद दादरा नगर हवेली की आंबोली पटेलात में ज्ञानी जैलसिंह गये थे। जहाँ कातकरी पाडा में कातकरी जनजाति के लोगों के लिए आवास बनाये गये थे । उसका उद्घाटन उन्होंने किया। उसके 1 घंटे बाद भास्कर राव जी को लेकर कातकरी वसाहत में गया। अति पिछड़ी यह जनजाती है। भास्कर रावजी ने उनके घर देखे। कुछ लोगों से बातचीत भी की। करीबन 2 घंटा हम उस बस्ती में रहे। उस समय उन्होंने कहा था, धीरे-धीरे आग्रह पूर्वक शिक्षा के प्रति उनके बच्चों में रुचि निर्माण करना होगा। उनका स्वभाव स्थिर रहने का नहीं है। यह हमें बताने के बाद उन्होंने कहा, हमें बहुत ज्यादा प्रयास करने होंगे। तभी वे विद्यालय में पढ़ेंगे।

कातकरी जनजाति-यह घुमन्तु जनजाति है। इसलिये सारे परिवार को लेकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना यह उनका स्वभाव था। आज भी है। शराब पीना, आपस में लड़ना-झगड़ना ये सब बातें थी। हमने 2 घंटे में यहाँ पर कल्याण आश्रम के जो प्रयास चल रहे थे, वह बताये। कातकरी बस्ती में रामायण पिक्चर दिखाते थे। उनके घरों पर श्रीराम जय राम जय जय राम यह मंत्र लिखा हुआ था। लोहे की पट्टी लगाते थे। आज भी कुछ घरों पर वह यही दिखती है। भजन कीर्तन कभी भोजन का कार्यक्रम भी बस्ती में करते थे। इस प्रकार दो घंटे तक हमने वहां पर बैठकर विचार-मंथन किया था। फिर शाम को भजन का कार्यक्रम कर हम वापस अपने खानवेल आश्रम में आये। भास्कर रावजी भरपूर समय विचार विमर्श के लिये देते थे । यह उनका अनुभव मुझे हमेशा याद आता था। मेरा सौभाग्य यह रहा कि मणिपुर बस्तर फिर से दादरा नगर हवेली में नजदीक का संबंध रहा।

अनौपचारिक वार्तालाप भी कुछ विषयों पर होता था। मैने एक बार उनसे पूछा कि, आज मुंबई इतना बड़ा विशाल महानगर बन गया है। संघ को कार्यक्रम के लिए जगह लगती थी। इसलिये अनेक प्रयासों के बाद जगह मिलती थी। मैने उनसे प्रश्न किया कि उस समय संघ ने जगह खरीद ली होती तो आज इतनी तकलीफ नहीं होती। उस समय उन्होंने कहा संघ कार्यालय का किराया देने के लिये हम 10 पैसे, 5 पैसे ऐसे इकठ्ठा करते थे तब जाकर किराया दे पाते थे। उस समय पैसा नहीं था।

दादरा नगर हवेली सूर्य निकेतन मोटा रांधा अनेक उतार-चढ़ावों के बावजूद भी प्रगति करता रहा, लेकिन उसमें बाधाएं आती थी। मैं जब 13 अक्टूबर 1995 में रांधा आया था, तब उन्होंने कहा था कि ईश्वर कृपा के लिए जानकार लोगों से बातचीत करके जानना चाहिए कि क्या उपाय हो सकते हैं? तब मैने कहा कि आश्रम परिसर में नवचंडी यज्ञ का आयोजन किया जाना चाहिये। इस बात को उन्होंने मान लिया था, वापी के पंडित श्री. रजनीकांत जोशी

जी के सान्निध्य में नवचंडी यज्ञ हुआ। नगरवासी सभी वनवासी लोगों ने आहुति समर्पित की। सबका एक साथ भोजन हुआ। तब उन्होंने कहा कि ईश्वर कृपा हमारे काम में बनी रहने के लिए कभी-कभी ऐसे कार्यक्रम होने चाहिये।

मेरी स्वयं की शादी भी मा.भास्कर रावजी ने ही करवाई थी यह उनके काम का अलग पहलू था। उसके लिए अंजली के माता पिताजी को मिलकर पूना में उनके घर जाकर बातचीत करके समाधान किया। एक पिता को अपनी बेटी की चिंता करना स्वाभाविक है। लेकिन आप निश्चिंत रहिए। आपकी बेटी की कार्य करने की इच्छा है तो उन्हे आप अनुमति दीजिए, मै आपको विश्वास दिलाता हूँ कि संगठन उसकी चिंता करेगा आप निश्चित रहिए। उसके बाद हमारी शादी हुई। मुझे लगता है कल्याण आश्रम में और भी कार्यकर्ता हैं जिनकी भास्कर रावजी ने मध्यस्थता करके शादी करवाई है ।

मुझे उनकी यह विशेषता लगती थी स्वयं संघ के प्रचारक लेकिन गृहस्थ जीवन के कार्यकर्ताओं को कार्य करते समय कार्य और गृहस्थी दोनों पर ध्यान देना होता है इस पर उनका ध्यान रहता था। ऐसे समय कभी आपातकालीन व्यवस्था करनी पड़ती है। उचित समय पर उसको आवश्यक मदद भी करना चाहिये। यह उनकी मानसिकता थी और व्यवहार भी था।

मैंने और भी एक बात अनुभव की कि किसी सुनी सुनाई बात पर वह निर्णय नही लेते थे। पूर्वाग्रह से कभी भी निर्णय नहीं लेते थे। इसके कारण कभी हम कार्यकर्ता के ऊपर अन्याय भी कर सकते थे । इसकी सावधानी रखनी चाहिये ऐसा उनका कहना था। कभी-कभी भास्कर राव जी अपनी पद्धति से सारी बात को देखते थे, शर्त पर दान नहीं लेना चाहिये, यह उनका कहना था, एक सज्जन ने कल्याण आश्रम को एक लाख रूपये दान में दिया और अपनी इच्छा प्रकट की, इससे मिलने वाले ब्याज से किताबें खरीदो। लेकिन आवश्यकता न होने के कारण किताबें खरीदी नहीं। तब दानदाता ने अपना दान वापस माँगा। यह बात जब भास्कर रावजी को बताई गयी तब उन्होंने कहा कि तुरंत उन्हे पैसे लौटा दो और शर्त पर दान नहीं लेना, अगर लिया तो उस पर ही खर्चा करना। मैं 1989 से मणिपुर में था जो बहुत संवेदनशील क्षेत्र था। कार्य आवश्यक था लेकिन कभी भी प्रवास रद्द नहीं करते। उनके स्वभाव में प्रवास रद्द करना, यह उन्हें पसंद नहीं था। इसके कारण स्थानीय कार्यकर्ता को तकलीफ होती है।

बस्तर की पुरानी अपनी महिला कार्यकर्ताओं के बारे में वे कहते थे । don't uprute them, they will grow their own speed and knowledge, don't hurry.

मा. भास्कर रावजी को गांवो में प्रवास करते समय भी हमने देखा है। बायपास सर्जरी के बाद उत्तर पूर्वांचल के मणिपुर राज्य में वे आते थे । जिस समय मैं मणिपुर का संगठन मंत्री था, तो जीप का रास्ता अच्छा नही था, तब भी जाना लोगों से मिलना इसमें उन्हें असीम आनंद आता था, स्वास्थ्य को देखते हुए उनका उत्साह बहुत प्रेरणादायी होता था ।

रानी गाइदिल्यु के भाई हैप्पो जादोनांग का फोटो बनाना था, उसके कैलेंडर बनवाने थे। जब रानी माँ अच्छी स्थिति में थी, तब उनसे पूछा गया था कि, कौन व्यक्ति जादोनांग जैसा दिखता है, तब उन्होंने जो व्यक्ति दिखाया उसी पर एक बड़ा फोटो बनाया था, अंग्रेज फांसी चढ़ाने के पहले उस व्यक्ति का फोटो अपने रिकार्ड में रखते थे, लेकिन वह ढूढने के बाद प्राप्त नहीं हुआ था, इसलिए रानी मां से पूछा ।

फोटो तैयार होने के बाद मा. भास्कर रावजी ने मुझे

कहा यह फोटो आप रानी मां के गांव में जाकर उनके घर में रखना। जो बुजुर्ग लोग हैं उनको बुलाना, उनको अपना फोटो देखकर क्या प्रतिभाव आता है, वह देखना उनको अगर लगा कि ये जादोनांग है तो समझना हम आगे बढ़ सकते हैं। उस समय मेरे साथ भैय्याजी काणे के छात्रावास में पढ़ाई किया हुआ युवक डिलींग कुबे भी था। हम रानी माँ के घर गये उस समय रानी माँ अस्वस्थ थी। परंतु अन्य लोगों ने देखा बुजुर्गों ने देखा और यह जादोनांग का फोटो है ऐसा उन्होंने गाँव के लोगो को बताया।

यह सारी बात हमने मा. भास्कर राव जी को बताई। तब उन्होंने कहा ऐसे मामलों मे हड़बड़ी में हमें कुछ नहीं करना चाहिये। उनकी उस क्षेत्र की मान्यता हमें लेनी चाहिये इसलिये आगे चलकर काम में बाधा नहीं आती है।

एक गाँव मे मा. भास्कर रावजी को ले जाना था, अभी गाँव में दूध उपलब्ध होना मुश्किल था, तब कार्यकर्ता दूध, चीनी, चाय पत्ती लेकर गाँव में गये। मा. भास्कर रावजी को बात पसंद नहीं आई, जैसा उनके घर में होगा वह हम लेंगे। काली चाय है तो वहीं पीएँगे।

स्व.भास्कर रावजी का स्वभाव मृदु था। किसी कार्यकर्ता को, ऐसा ही करो यह नहीं कहते थे, विचार व्यक्त करते थे, ऐसा करने से ये हो सकता है। संघ जैसा करता है, वैसा ही हमें करना चाहिये यह भाव रहता था। स्वयं प्रांत प्रचारक रहे हुए जो व्यक्ति वनवासी कल्याण आश्रम का दूर दराज क्षेत्र में कार्य करता है, वहाँ की परिस्थिति अलग है, समस्या अलग है, इसलिये निरीक्षण, चिंतन, मनन करके वहाँ की आवश्यकतानुसार उन्होंने विचार किया। उसी प्रकार संगठन में भी वह भाव प्रकट किया। यह उनकी विशेषता थी ।

संघ से कल्याण आश्रम के दायित्व में आने के बाद दो साल वनवासी क्षेत्र का भ्रमण किया, वहाँ की स्थिति मानसिकता, हमें अब क्या करना है इसका गहन चिंतन उन्होंने किया और कार्य किया।

कार्यकर्ता कोई मशीन नही है कि बटन चालू किया और यंत्र काम करने लगेगा। काम करने वाले मनुष्य हैं। उसे खुलने में समय लगता है, धीरे-धीरे अपनी बात को रखेगा। उसके लिए हमें समय देना पड़ेगा और वह समय देते भी थे। रांधा में कार्यकर्ता के साथ लंबे समय तक बात करते हुए मैने उन्हें देखा है। मा. भास्कर राव जी के बारे में लिखने के लिये बहुत कुछ है।शांत, मृदुभाषी, हर एक का सम्मान करते हुए कभी भी किसी का संगठन में अनादर न करते हुए उसके समय के योगदान का सम्मान करते थे। **कभी भी अपने विचार थोपते नहीं थे, उनके व्यवहार के कारण कार्यकर्ता सहज रूप से उनके मार्ग पर विचार मंथन करते थे और कार्य करते थे।**

पूना के एक कार्यकर्ता बस्तर में कार्य करने के लिए गये थे। 5-6 साल कार्य करने का विचार था, लेकिन एक साल के बाद मलेरिया से बीमार पड़ गये। कमजोरी आने के कारण पूना वापस आ गये।

मा.भास्कर रावजी पूना प्रवास के दौरान उनसे मिलने गये तब उन लोगों ने कहा, भास्कर रावजी आप फोन करते तो मैं आपको कार्यालय में मिलने चला आता। आपका समय अमूल्य है।

तब उन्होंने कहा बड़ी-बड़ी बातें करने वाले बड़े-बड़े सुझाव देने वाले लोग होते हैं। हम उनका आदर सम्मान करते हैं। परंतु प्रत्यक्ष समय दान देने वाले व्यक्ति मिलते नहीं है, तब तक कुछ होने वाला नही है। आपने वह किया आप बस्तर में गये। ठीक है वहाँ पर आप बीमार हो गये और वापस आ गये। मैं कार्य करने वालों का आदर करता हूँ। प्रणाम करता हूँ। ❑

पुण्यस्मरण : श्रद्धेय भास्कर राव

राधिका लड्ढा
उपाध्यक्षा, राजस्थानी वनवासी कल्याण केन्द्र

युगों से ब्रह्मांड को अपने तेज से, अपने आलोक से प्रकाशित करता, अणु-रेणु सभी में अपनी ऊर्जा भरते भुवन-भास्कर ने कभी आ कर किसी को नहीं कहा कि वह नहीं तो सृष्टि का अस्तित्व भी नहीं हो सकता। कभी अहंकार नहीं किया कि यदि वह अनुपस्थित हो गया तो यह ब्रह्मांड अंधकार के सिवा कुछ नहीं, क्योंकि उसी से प्रकाश ले कर चांद सितारे चमकते हैं। वह एक अकेला होते हुए भी अपने को मिले कार्य को बस करते जाता है, करते जाता है। बादल आ कर उसे ढकने की कोशिश करे या कोई उससे बचा कर काल-कोठरियों का निर्माण करे, वह तो अपना कार्य करते ही जाता है, अहर्निश, निरंतर, बिना एक क्षण भी विलंब किए, अनुशासित हो कर। क्यों? क्योंकि यह उसका स्वभाव है, क्योंकि उसने अपना कर्तव्य समझा है, अपना जीवन लक्ष्य बनाया है कि:

'शूलों से हो मधुबन पटा,
या राह में विन्ध्याचल हो अड़ा,
निज ध्येय को मन में रख के अडिग,
बाधा श्रृंगों को ध्वस्त करुं।

और इसी अटल, दृढ़ निश्चय के कारण ही उसकी राह में आते अगणित बाधा श्रृंग ध्वस्त होते जाते हैं।

उस शाश्वत भुवन भास्कर के नाम को धारण किये एक भास्कर, महामना भास्कर राव कलंबी अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम को मिले। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से दीक्षित प्रचारक के रुप में प्रथम कर्मस्थली केरल को चुना और उस चुनौतीपूर्ण कार्यक्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित किए तो संघ ने और भी कठिन क्षेत्र, यानि वन और वनवासियों के बीच रह कर उनके सर्वांगीण विकास हेतु अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम में भेजा। बालासाहब देशपाण्डे के संकल्प, मोरुभाऊ केतकर की कार्यनिष्ठा एवं मिश्रीलाल जी के कठोर अनुशासन से कल्याण आश्रम ने वनांचल में अपने दृढ़ पाँव जमा लिये थे। श्रीयुत भास्कर राव के आगमन से कल्याण आश्रम में और भी उत्साह बढ़ गया।

अखिल भारतीय संगठन मंत्री भास्कर राव अपने स्वयं के प्रति कठोर अनुशासन का पालन करते थे, हमेशा प्रसिद्धि पराङ्मुख रहे। कभी भी उन्हें मंच पर हमने नहीं देखा। इतने विकट, विराट कार्य की बागडोर अपने हाथ में होते हुए भी वे हमेशा रंगमंच के सूत्रधार के रूप में परदे के पीछे रह कर ही संचालन करते थे। **किंतु उनके हृदय में कार्यकर्ताओं के लिये प्रेम का अजस्र स्त्रोत बहा करता था। वे बड़े शांत भाव से कार्यकर्ताओं की बातें, शिकायतें, उलझनें सुनते और प्यार से उन्हें मार्गदर्शन देते हुए ऐसे दुलार देते कि कार्यकर्ता जो कार्य छोड़ने की मानसिकता ले कर आता, वो भी नवीन उत्साह ले कर उनके इशारे पर जीवन होम कर देने का मन बना कर लौट जाता। और वे भास्कर की तरह ही चुपचाप सबके जीवन को आलोकित करते**

रहते, नवीन ऊर्जा का संचार करते रहते।

वैसे बहुत ज्यादा सानिध्य तो उनका नहीं मिला, किंतु एकाध संस्मरण अवश्य ही प्रस्तुत करना चाहूँगी।

एक बार उदयपुर में राजस्थान वनवासी कल्याण परिषद् के कोर-ग्रुप की बैठक में मा. भास्कर राव उपस्थित थे। दिन भर कई विषयों पर गहन चिंतन होता रहा। रात्रि में भोजन उपरांत साढ़े दस बजे तक जारी बैठक में चाय बन कर आई, तो मैंने पीने से मना कर दिया। कार्यकर्ताओं का गहराई से निरीक्षण करने वाले भास्कर राव ने मुझसे चाय नहीं पीने का कारण पूछा तो मैंने सहज भाव से बताया कि पूरे दिन बहुत चाय पी है, अत: अब आवश्यकता नहीं है। उन्होंने दो-तीन बार आग्रह किया किंतु मैने ना ही बोल दिया तो उन्होंने कहा, ''यदि हम बार-बार चाय नहीं पी सकते तो कल्याण आश्रम का कार्य कैसे कर सकते हैं? वनवासी के साथ मिलना, उठना-बैठना एवं खाना-पीना नहीं होगा, उनके अतिथि सत्कार में लायी गई चाय को नहीं पी सकते तो कैसे हम कार्य कर सकेंगे? इसलिये चाय पीने की आदत बनाये रखनी चाहिये।'' और ..... मुझे वो चाय पीनी ही पड़ी।

एक बार भास्कर राव बीमार थे, तो डॉक्टर ने उन्हें कुछ दिनों के लिये किसी शांत, स्वास्थ्यप्रद स्थान में काम से चिंतामुक्त रहने की सलाह दी। मा.गुणवंत जी भाई साहब उन्हें आराम के उद्देश्य से उदयपुर ले आये एवं तीन दिन मेरे घर रहेंगे, ऐसा निर्णय किया। मैं इस सौभाग्यशाली अवसर को पा कर अत्यंत खुश हो गई। किंतु भाईसाहब मेरे कार्यकर्ता मन को और दृढ़ता देना चाहते होंगे इसीलिये मुझे सेवा का अवसर मिल गया, क्योंकि उस समय सभी बालक भी उदयपुर से बाहर पढ़ाई करने गये हुए थे, हम दोनों पति-पत्नी ही थे, तब उनके सानिघ्य में मैंने कितनी ही बातें जानी और सीखी। एक दिन मैंने आलू की भरवां शिमला मिर्च की सब्जी एवं पालक-बेसन के गट्टे की सब्जी बनाई तो उन्होंने बड़े चाव से खायी एवं प्रशंसा करते हुए बताया कि हम प्रचारकों को ऐसी सब्जियाँ कभी-कभी ही खाने को मिलती है, तो मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि इतने बड़े व्यक्ति जो इतने बड़े संगठन को चलाते हैं, वे इस बात को कह रहे थे, तब मैंने जाना कि प्रचारक का जीवन सच में अंगारों पर चलने जैसा कठिन है और फिर भी जगत का तप-ताप सहन कर प्रसन्न रहना है।

उस समय मैं श्री अरविंद की कविताओं पर अंग्रेजी साहित्य में पी.एच.डी. कर रही थी। उस विषय पर भी उनसे बहुत चर्चाएं हुई। अत्यंत कठिन श्री अरविंद के साहित्य को पढ़ना मेरे सामर्थ्य के बाहर का लग रहा था तो मैं पहले दूसरे अनेकों लेखकों द्वारा किए गये विश्लेषणों को पढ़ रही थी। मा. भास्कर राव ने मेरे मार्ग को प्रशस्त करते हुए बताया कि मुझे सीधे श्री अरविंद के शब्दों को ही पढ़ना चाहिये, बार-बार, एकाग्र चित्त हो कर पढ़ना एवं श्री अरविंद के चरणों की शरण लेकर उनको ही निवेदन करना कि वे मेरी दृष्टि को खोलें और सच मानिये! मा.भास्कर राव की सबकी बात मान कर टीकाओं को एक तरफ रख मैंने सीधे श्री अरविंद को पढ़ना प्रारम्भ किया। श्री अरविंद की असीम कृपा मुझ पर बरसी, जिसके फलस्वरूप मैं अपने पी.एच.डी. (विद्यावाचस्पति) के कार्य को सम्पन्न कर पाई।

ऐसे हमारे अपने, प्रेम के साक्षात् अवतार मा. भास्कर राव के अल्प सानिध्य को पाकर ही मुझे जीवन की धन्यता प्राप्त हुई। ❑

भास्कर राव कलंबी : एक महान योगी

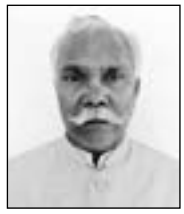

जगदम्बा मल्ल
वरिष्ठ लेखक एवं स्तम्भकार

बुद्धियुक्तो जहातीत उभे सुकृत दुष्कृते।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योग: कर्मसु कौशलम्।।
गीता 2:50।।

समबुद्धियुक्त पुरूष पुण्य और पाप दोनों से मुक्त हो जाता है। शुभ कर्मों को कुशलतापूर्वक करना ही योग है। इसलिए तू समत्वरूप योग में लग जा अर्थात् तू शुभ कर्म किए जा किन्तु रणभूमि में अर्जुन धनुष-वाण रखकर कृष्ण से बोले कि यदि धृतराष्ट्र के पुत्र युद्ध में मार भी देंगे तो भी मैं उनको मारने का पाप नहीं करूंगा। कृष्ण कहते हैं कि पार्थ! आपको युद्ध करना ही होगा। युद्ध में मारे गये तो स्वर्ग मिलेगा और जीत गए तो पृथ्वी के सम्राट बनेंगे। भगवान कृष्ण स्पष्ट उपदेश देते हैं-'जय-पराजय, लाभ-हानि और सुख-दु:ख को समान समझकर युद्ध के लिए तैयार हो जा। इस प्रकार युद्ध में शत्रु (राष्ट्रद्रोहियों) को मारने से आपको पाप नहीं लगेगा। गीता 2:38।। कृष्ण भगवान भाँति-भाँति से समझाते हैं किन्तु अर्जुन हैं कि मानते ही नहीं और पूछ पड़ते हैं- हे जनार्दन ! आपको कोई कर्म की अपेक्षा ज्ञान श्रेष्ठ मान्य है तो फिर आप मुझे (अपने ही लोगों की हत्या करने जैसे) भयंकर कर्म में क्यों लगाते हैं। कृष्ण भी परेशान। अर्जुन की उलझन दूर होती ही नहीं है। भगवान कृष्ण स्वयं अपने स्वरूप को प्रकट करना नहीं चाहते हैं। इसलिए ऐसी परिस्थिति पैदा करते हैं कि अर्जुन केशव से विराट रूप दिखाने के लिए आग्रह कर बैठते हैं और केशव अपने विराट रूप का दर्शन कराते हैं। इस प्रकार अर्जुन कृष्ण का विराट रूप देखकर योगस्थ होकर युद्ध में दुष्टों का दमन कर देते हैं। अर्जुन श्रेष्ठतम योगी बनकर धर्म स्थापना के लिए अपने ही वंश अधर्म के पक्ष में खड़े पितामह भीष्म सहित सबका वध कर देते हैं और वध हेतु प्रेरित करने वाले स्वयं ब्रह्माण्ड नियंता भगवान कृष्ण हैं। भास्कर राव के अन्दर यह योगी निहित था। आइये! देखते हैं कैसे?

भास्कर राव का योगी स्वरूप :

वर्ष 1984 से 12 जनवरी 2002 को उनके स्वर्ग गमन तक उनके मार्गदर्शन व सान्निध्य में कार्य करने का मुझे सौभाग्य मिला था। मैं भी एक जिज्ञासु कार्यकर्ता था। अत: मैं भास्कर राव के विलक्षण गुणों से प्रभावित होकर उनके जैसा बनने की चेष्टा करता था। इस प्रयास में मैंने उनकी पारिवारिक जानकारी लेने की चेष्टा की।

6 अक्टूबर 1914 को म्यांमार के रंगून के निकट हिक्सा में जन्में भास्कर राव बचपन से ही माता-पिता से हाथ धो बैठे और मुम्बई आकर एल.एल.बी. करते समय प्रथम संघ प्रचारक गोपालराव मेरकुंटवार के सम्पर्क के कारण 1935 में संघ के शिवाजी उद्यान शाखा में आये। पूज्य डॉक्टर जी के मुम्बई आगमन पर भास्कर राव उनकी सेवा में रहते थे।

भास्कर राव और डॉक्टर साहब का मिलन मानों नरेन्द्र का रामकृष्ण परमहंस से मिलन था, अर्जुन की कृष्ण से भेंट थी। जिस प्रकार रामकृष्ण परमहंस से ज्ञान प्राप्त कर नरेन्द्र बदलकर स्वामी विवेकानन्द बन गये और माया मोह के जाल में फँसे अर्जुन

कृष्ण भगवान से मिलकर विश्व विजयी धनुर्धारी अर्जुन बन गये; उसी प्रकार डॉक्टर हेडगेवार जी से मिलकर भास्कर राव कलंबी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ प्रचारक के रूप में योगी भास्कर राव बन गये।

निष्काम कर्म का अनुसरण करते हुए इन्होंने कम्युनिस्ट, ईसाई, इस्लाम और छद्म कांग्रेसियों के चंगुल में फँसे केरल के मलयाली समाज को संघ शाखा के माध्यम से मुक्त करने का सफल प्रयास किया और जहाँ गये वहीं के हो गये, घर की ओर मुड़कर भी नहीं देखा।

वर्ष 1988 की बात है। मैं रांधा के संगठन मंत्रियों की बैठक से वापस लौटा था और मुम्बई के 35 चंचल स्मृति कार्यालय पर ठहरा था। भास्कर राव भी यहीं आ गये थे। हम 2-3 कार्यकर्ता उनके साथ बैठकर कल्याण आश्रम की चर्चा कर रहे थे। उनके परिवार का संदर्भ आने पर मैंने भास्कराव से पूछ लिया- ''भास्करजी आप कितने भाई-बहन हैं। आपके घर में कौन-कौन है?

भास्कर जी - अरे! मेरे बारे में क्या पूछ रहे हो। घर गये तो दस वर्ष हो गये। मेरे दो बड़े भाई गणेश और आत्माराम तथा एक छोटा भाई शंकर है, एक बहन है शशिकला। किन्तु भाइयों को छोड़कर उनके बच्चे तो मुझे पहचानते भी नहीं, मैं भी उन्हें नहीं पहचानता क्योंकि मैं प्रचारक निकलने के बाद कभी घर गया ही नहीं। मुझे यह भी पता नहीं कि हमारे तीनों भाई कहाँ हैं। बहन शशिकला कहाँ है?

जगदम्बामल्ल- भास्करजी आपको कभी अपने भाइयों, बहन और घर की याद नहीं आती है, घर जाने की इच्छा नहीं होती है?

भास्कर राव-अरे! तुम घर जाने की बात कर रहे हो? उनकी तो याद भी नहीं आती है। प्रचारक बनकर घर छोड़ा और संघ कार्य हेतु केरल आ गया। यहाँ की कठिन परिस्थिति में संघ कार्य खड़ा करना था। यहाँ संघ का काफी विरोध था। इसलिए पूर्ण समय संघ व स्वयंसेवकों के चिन्तन में ही समय बीत जाता था। घर को याद करने के लिए समय कहाँ?

यह कहकर भास्करराव ने अपना एक संस्मरण सुनाया ''एक दिन मैं सीढ़ी से अपने चंचल स्मृति के इसी कार्यालय में आ रहा था तो फ्लैट के दरवाजे पर एक चिट्ठी पड़ी हुई थी। उसे डाकिया छोड़ गया था। पत्र पर नाम के साथ कलंबी लिखा हुआ था। मैंने सोचा कलंबी तो मैं हूँ फिर यह दूसरा कलंबी कौन है। उसके बाद मैंने पता लगवाया तो वह व्यक्ति मेरे बड़े भाई का बेटा निकला। हम दोनों एक भवन में रह रहे हैं किन्तु एक दूसरे को नहीं जानते क्योंकि मैं कभी घर नहीं जाता था, शादी-विवाह में भी कभी नहीं गया। जाता भी किस लिए? संघ कार्य ही मेरी साधना थी। परिवार का कोई आकर्षण नहीं था। संघ ही परिवार था और स्वयंसेवक उसके सदस्य।

अगाध स्नेह

भास्कर राव के अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम का राष्ट्रीय संगठन मंत्री बनने के समय मैं कल्याण आश्रम नागालैण्ड का संगठन मंत्री था। मैं महालेखाकार के कोहिमा कार्यालय में नौकरी भी करता था और मेरा परिवार भी संघमय ही था। नागालैण्ड प्रवास के दौरान भास्कर राव देर रात बुलाकर मुझसे पूछते थे- आप ए जी ऑफिस में नौकरी करते हैं, परिवार भी साथ में रखे हैं फिर नागालैण्ड में प्रवास करने के लिए समय कैसे निकलते हैं? कार्यालय में अनुपस्थित होने पर आधिकारी आपको पूछते नहीं है क्या?आप अपने दफ्तर का काम कैसे सलटाते हैं?'' मैं उनको बताता

था-''शनिवार रविवार को छुट्टी रहती है, शुक्रवार शाम को आस-पास के गाँवों में चला जाता हूँ और सोमवार को 10 बजे तक कार्यालय पहुँच जाता हूँ। कभी-कभी दूर के प्रवास पर जाता हूँ तो अर्जित अवकाश, अर्धवेतन अवकाश या अवैतनिक अवकाश लेकर जाता हूँ। छुट्टी खत्म हो जाने पर अधिकारी की डांट भी सुननी पड़ती है। किन्तु मेरे न रहने से जो काम अपूर्ण रहता है उसे सुबह जल्दी आकर तथा शाम को छुट्टी के बाद तक काम पूरा कर देता हूँ''।

भास्कर राव - ''अवैतनिक अवकाश भी लेते हैं?

जगदम्बा मल्ल-हाँ भास्करजी, सम्पर्क व सर्वेक्षण करने के लिए बार-बार प्रवास करना पड़ता है। बाहर के छात्रावासों में छात्र-छात्राओं के चयन के लिए प्रवास करना होता है। कभी-कभी स्थानीय कार्यकर्ताओं की पारिवारिक समस्याओं को हल करने के लिए प्रवास करना पड़ता है। उन्हें त्यौहारों तथा विवाहादि कार्यक्रमों में भाग लेना पड़ता है। सबके लिए दफ्तर से छुट्टी नहीं मिलती है इसलिए अर्जित अवकाश, अर्धवेतन अवकाश तथा चिकित्सा अवकाश समाप्त हो जाने पर अवैतनिक अवकाश लेकर प्रवास करता हूँ। कल्याण आश्रम का कार्य जारी रखता हूँ। आतंकवादियों से भी सामना होता है, चर्च के पादरियों से भी सामना होता है, फिर भी सबको झेलते हुए कार्य करता रहता हूँ।

भास्कर राव-अकेले प्रवास करते समय आपको डर नहीं लगता है?

जगदम्बा मल्ल- लगता है, किन्तु खतरा मोल लेकर प्रवास करता हूँ। मेरे अनेक मित्र मुझसे मिलना नहीं चाहते हैं किन्तु उन सबकी परवाह न करते हुए मैं प्रवास करता ही रहता हूँ।'

भास्कर राव मेरी बात बड़े दत्त चित्त होकर सुन रहे थे और बोले- कार्य कठिन है इसलिए खूब सावधानी पूर्वक आगे बढ़ो। धीरे-धीरे बढ़ो ताकि दुश्मनों का ध्यान आप पर न पड़े। ज्यादा चर्चा में मत रहो। समाचार पत्रों में लेखन आप को तकलीफ में डाल सकता है इसलिए होशियार रहो।'' अन्त में बोले- **''यह ईश्वरीय कार्य है, यही ईश आराधना है, इस साधना में लगे रहो, अवश्य सफलता मिलेगी।''** उस योगी पुरुष का आशीर्वचन मुझे सदा प्रेरित करता रहा है। उस दिव्यात्मा को मेरी विनम्र श्रद्धांजलि। ❑

माननीय भास्कर राव की जन्मशती निमित्त आगरा में यज्ञ का आयोजन

वनवासी कल्याण आश्रम के आगरा के कार्यकर्ताओं ने बालिका छात्रावास पर माननीय भास्करराव के जन्मशती के उपलक्ष में एक यज्ञ का आयोजन किया। इस निमित्त प्रदेश मंत्री अनुराधा भाटिया ने उनका स्मरण कर सबको अपने अनुभव सुनाए।

उन्होंने कहा मा.भास्करराव ने केरल में संघकार्य बड़े ही कठिन परिस्थिति में खड़ा किया। जिन मंदिरों में शाखा शुरू हुई वे सारे मंदिर आज बचे है। हर तीन कि.मी. एक शाखा ऐसा वर्तमान संघकार्य है, जिसकी नीव में मा. भास्करराव जी के प्रयास रहे है। उन्होंने केरल के मछुआरों, मजदूरों, रिक्शा चालकों में कार्य खड़ा किया। वर्तमान में वायनाड के पास जनजाति समाज के बीच चिकित्सा सेवा के रूप में विवेकानंद अस्पताल चल रहा है, ये भी मा. भास्कर राव के प्रयास से ही प्रारम्भ हुआ था। संक्षेप में कहे तो उनके प्रयासों से केरल में समाज का सामान्य जन कार्य के साथ जुड़ गया। ❑

सेवा कार्यों के प्रेरक : भास्कर राव

प्रमोद पेठकर
प्रचार-प्रसार प्रमुख, अ.भा.वनवासी कल्याण आश्रम

प्रेरणा न वाणी से, न भाषण से मिलती है। उपदेश देने से भी नहीं। कथा-प्रवचनों से विचार मिलते हैं, मन-मस्तिष्क को दिशा मिलती है परन्तु प्रेरणा तो कथनी से भी अधिक करनी से मिलती है, आचार-व्यवहार से मिलती है। सह-अस्तित्व से प्रेरणा जन्म लेती है। न उसका कोई समय होता है, न ही उसकी व्याख्या कर सकते हैं। समाज-जीवन में ऐसे कई व्यक्ति होंगे जिनके साथ रहने मात्र से हम कार्य करने हेतु ऊर्जा प्राप्त करते हैं। उन्हीं में से एक है हमारे भास्करराव। आज इतने वर्षों बाद भी कई कार्यकर्ता स्मरण करते हैं, उनके स्नेहपूर्ण व्यवहार को। उन्होंने कार्यक्रमों में बहुत प्रभावी वक्तव्य दिया हो ऐसा स्मरण में नहीं है परन्तु उनसे मिलने पर कार्यकर्ता कई प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर वापस गए ऐसा कई बार हुआ है। यही कारण है उनके स्मरण का। कई कार्यकर्ताओं को लगता है कि मुझे कार्य करना चाहिए, क्यों ? तो भास्करराव कर रहे हैं इसलिए अथवा भास्करराव ने कहा है इसलिए। प्रेरणा प्राप्त करनेवाले व्यक्ति और प्रेरक व्यक्तित्व के रूप में कार्य करने वाले दोनों बुद्धिशाली होना अनिवार्य नहीं है, केवल आवश्यकता है संवेदनशील होने की और वह संवेदनशीलता का अनुभव कार्यकर्ताओं ने कई बार भास्करराव जी के साथ रहते हुए किया और उसी में से जन्म लिया आजीवन कार्य करने का संकल्प। आज भी सुदूर वन-पर्वतों में कार्यकर्ता अथवा केरल जैसे विषम परिस्थिति में कार्यकर्ता कार्य कर रहे हैं। विधि की पदवी प्राप्त कर भास्करराव जब केरल में संघ कार्य करने हेतु पहुँचे तो आज के तमिलनाडु और केरल दोनों प्रान्त एक ही थे। अर्थात संघ का काम बहुत ही कम था। उनके लिए यह एक आह्वान था। उन्होंने प्राप्त परिस्थिति में अत्यंतिक कष्ट सहे, अपनी क्षमता का परिचय दिया और साथी कार्यकर्ताओं को अपने व्यवहार के कारण अधिक कार्य करने हेतु प्रवृत्त किया। तभी तो केरल एक ऐसा प्रांत बना कि जिसमें सम्पूर्ण देश में सर्वाधिक शाखाएँ खड़ी हुई।

केरल के साथ समरस

सबसे प्रथम तो उन्हें अपनी मराठी छवि से दूर होकर केरल के सामाजिक जीवन के साथ समरस होना था। इसमें भाषा प्रमुख थी। वे पहले कभी ऐसी शाखा पर पहुंचे जहाँ आसपास में मराठी परिवारों की संख्या थी। कार्य करते समय यदि कार्यालय के रूप में मुझे कोई स्थान चयन करना हो तो वह ऐसा मोहल्ला हो कि जहाँ आसपास मलियाली परिवार रहते हों। कार्यवृद्धि के लिए मुझे मेरी मराठी छवि से बाहर आकर स्थानीय समाज के साथ घुलमिल जाने के प्रयास करने चाहिए। दक्षिण भारत में दो संघ प्रचारक इस हेतु उदाहरण कह सकते हैं। एक वर्षों तक वहाँ रहने पर भी वहाँ भाषा सीख न सके और एक ऐसा प्रचारक जो कुछ ही वर्षों इतने समरस हो गए कि उनके मूल का किसी को पता तक न हो। भास्करराव भी मलियाली भाषा सीखने हेतु बाल स्वयंसेवकों के बीच प्रारम्भ में मलियाली बोलने का प्रयास करते थे और इसी में मलियाली बोलना सीख

गए। केरल का पहनावा, केरल का आहार ये-सब ऐसे जुड़ गया कि भास्करराव कळंबी में से वे के. भास्करराव बन गए। सामाजिक जीवन में कार्य करने हेतु यह एक आवश्यक पहलू है जो भास्करराव ने अपने व्यवहार से सिद्ध किया।

समाज से हमें लेना नहीं देना है

कहते है कि संघ में व्यक्ति आता है कुछ देने के लिए। यदि कोई लेने आता है तो कुछ नहीं मिलता, कुछ दिनों बाद वह इतना समरस हो जाता है कि देते-देते संघमय हो जाता है। यह पाठ संघ में शिविरों का शुल्क देने से शुरू होता है। गणवेश भी अपने खर्च से बनाना है। कुछ तरुण स्वयंसेवक ऐसे थे कि संघ शिक्षा शिविर में जाने की अनुमति घर से प्राप्त कर सकते है उसके लिए 'ना' नहीं परन्तु शुल्क कहाँ से लाएंगे। तो भास्करराव ने कई तरुण कार्यकर्ताओं को विद्यार्थी जीवन में ट्यूशन करने को कहा। उसमें से जो आय प्राप्त होती है उससे संघ शिक्षा वर्ग का शुल्क देने को प्रवृत्त किया। मुझे कुछ देना चाहिए, यह गुण छोटी आयु में विकसित करने हेतु भास्करराव ने अनेकों को प्रेरणा दी। जीवन में आई कठिन परिस्थिति से मार्ग निकालने का गुण भी विकसित हुआ। इसके लिए न कोई भाषण न कोई उपदेश, यह तो आत्मीयता के साथ कही बात का परिणाम था।

कार्यालय कैसा हो ?

कार्यालय यह अपने कार्य की मानों एक प्रेरणास्थली है। यहाँ कार्यकर्ता आते हैं, एक-दूसरे को मिलते हैं, अच्छे मित्र बन जाते हैं। लम्बे समय तक कार्य करने हेतु कार्यालय जीवन का अनुभव कई बार बहुत काम आता है। अपना संघ कार्यालय कैसा हो? इस सन्दर्भ में भास्करराव कई बार कहते कि यह कोई डॉरमेटरी रूम का आवासीय भवन न बने जहाँ सबके लिए व्यक्तिगत रहने हेतु सारी सुविधा है परन्तु सहज-सामाजिक जीवन जैसा कुछ नहीं। हमें स्वच्छ, सभी आवश्यक व्यवस्थाओं से युक्त कार्यालय बनाना चाहिए परन्तु उसकी रचना ऐसी हो कि सभी अपने-अपने कमरे से बाहर आते ही एक साथ मिलने, बैठने, गप-शप करने हेतु कोई एक बड़ा सा कमरा हो। साथ में रहना, खुल कर गपशप करना, हँसते-खेलते काम करना, इसके लिए कार्यालय प्रमुख केन्द्र बनाना चाहिए। यह केवल प्रचारक अथवा पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं का निवास स्थल न बन जाए। कार्य को गति देने वाला केन्द्र बने, ऐसा उनका सदैव आग्रह रहता।

वर्षों बाद वनवासी कल्याण आश्रम की जिम्मेवारी मिलने पर जब उनका केन्द्र मुम्बई बना तब हृदय की शल्य चिकित्सा हुई थी। उनके लिए मुम्बई के कल्याण आश्रम के कार्यालय के बदले नवयुग निवास यह संघ कार्यालय अधिक सुविधाजनक होगा ऐसा लगने पर अधिकारियों ने उन्हें वहाँ रहने को कहा। अधिकारियों की आज्ञा का पालन करते हुए वे कुछ दिन उस कार्यालय पर रहे और दिन में काम हेतु वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यालय पर आते थे। परन्तु ये लम्बा नहीं चला। एक दिन वे स्वयं वनवासी कल्याण आश्रम कार्यालय पर अपना सामान लेकर आ गए। उनका कहना था कि काम को समझना होगा, कार्यकर्ताओं के साथ सहज रूप में काम करना होगा तो मुझे मेरी सुविधा-असुविधा देखने के बदले जो उपलब्ध व्यवस्था है उसके साथ अनुकूल होना ही चाहिए। वे जैसे ही कार्यालय आए तो वहाँ मुम्बई में उनके परिचित केरल से जुड़े कुछ परिवारों का आना शुरू हो गया। जैसे-जैसे कल्याण आश्रम के कार्य का परिचय बढ़ते गया तो अन्य प्रान्तों से भी कार्यकर्ता उन्हें मिलने मुम्बई आने लगे।

कार्यालय सदा भरा-भरा सा रहने लगा।

व्यक्तिगत सम्पर्क का महत्व

कार्य वृद्धि में बैठक, प्रशिक्षण वर्ग, कार्यक्रम इसका अपना एक स्थान अवश्य है परन्तु कार्यकर्ताओं के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क का भी एक विशेष महत्व है और वह सम्पर्क भी उस स्थान पर जहाँ कार्यकर्ता प्रत्यक्ष काम कर रहा है। कार्यकर्ता को मिलने वहाँ जाना चाहिए, चाहे वह कितना भी दूर क्यों न हो। मुम्बई से भास्करराव एक कार्यकर्ता को मिलने मणिपुर जाने वाले थे - विषय को स्पष्ट करने हेतु ये बात स्वयं पर्याप्त है। भास्करराव जी का प्रवास में स्वास्थ्य ठीक नहीं था तो कार्यकर्ता ने सहज रूप में सुझाव दिया कि आप इतने दूर वहाँ जाएंगे उसके बदले कार्यकर्ताको हम प्रान्त केन्द्र पर एकत्रित कर लें तो कैसा ? भास्करराव ने कहा प्रान्त केन्द्र पर क्यों गुवाहाटी ही बुला लो अथवा गुवाहाटी क्यों मुम्बई भी बुला सकते हैं। परन्तु हमारा उद्देश्यपूर्ण होगा क्या? हमें वहाँ जाना चाहिए जहाँ कार्यकर्ता प्रत्यक्ष काम कर रहा है। कठिन परिस्थिति में वह कैसे काम करता है ये बात तो वहाँ जाकर ही देख सकेंगे। उसमें अपनी सुविधा देख क्या करेंगे। ये कहने की आवश्यकता नहीं कि स्वास्थ्य ठीक न होते हुए भी भास्करराव बैठक हेतु सुदूर वन क्षेत्र में गए और कार्यकर्ताओं से मिलकर आए। कार्य हेतु अंत: ऊर्जा कहो अथवा प्रेरणा कहो ऐसे व्यवहार से ही प्राप्त होती है। सारी सुविधा देख काम करने से नहीं।

मैं कार्य करना सीख रहा हूँ

भास्करराव ने वनवासी कल्याण आश्रम में आने से पूर्व केरल में वर्षो तक संघ प्रचारक के रूप में कार्य किया था। संघ कार्य के माध्यम से सामाजिक जीवन का अनुभव तो उनके पास था ही। परन्तु वनवासी कल्याण आश्रम में आने के पश्चात वे कई समय तक कहते थे कि पहले मैं कार्य करना सीखूंगा। इस हेतु प्रारम्भिक दो वर्ष में वे अखिल भारतीय संगठन मंत्री होते हुए भी बैठकों में, कार्यक्रमों में बौद्धिक अथवा भाषण नहीं देते। कार्यकर्ताओं से मिलना, उनकी विशेषता जानना, कार्यकर्ता के मन को स्पर्श करना यही उनका उपक्रम रहा। उसी से वे सबके बन गए। किसी भी कार्यकर्ता को भास्करराव कभी अधिकारी लगे ही नहीं। ये दूरी का किसी ने अनुभव ही नहीं किया।

परिणामत: सबके मन में एक विश्वास था कि मेरी समस्या का समाधान करने हेतु मुझे भास्करराव को मिलना चाहिए। ऐसी स्थिति में भी भास्करराव के मन की अवस्था थी कि कार्य को समझने हेतु मुझे उसे सीखना है। कहते हैं कि सीखने की कोई आयु नहीं होती। भास्करराव को देख कर इस बात पर विश्वास बढ़ता है।

भास्करराव एक ऐसा व्यक्तित्व कि उनके प्रति जितना लिखे उतना कम। आज भी कई कार्यकर्ताओं से हम मिलते हैं और यदि बातचीत में भास्करराव को स्मरण किया जाए तो घण्टों तक कहने के लिए बहुत कुछ होता है। बात शुरू होती है भास्करराव से और बात आकर रूकती है अपने आज के कार्य पर। कई कार्यकर्ता कहेंगे कि मैं आज वनवासी कल्याण आश्रम के कार्य में संलग्न हूँ इसका प्रमुख कारण है - भास्करराव। मुझे लगता है इसको हम कार्य प्रेरणा कहेंगे। ये बात सही है कि व्यक्ति केवल माध्यम होता है परन्तु व्यक्ति को कार्य प्रेरणा का माध्यम बनने के लिए अपने आपको सदैव संवेदनशील रहना है। भास्करराव जी का संवेदनशील मन कार्यकर्ताओं ने जीवन के अंतिम दिनों में भी देखा। इस प्रेरक व्यक्तित्व के लिए इससे अधिक क्या कहें ? ❑

भास्कर राव सबके थे

एन. जंगैया
बस्तर संभाग, संगठन मंत्री

'जिह्वाय अग्रे मधु मे, जिह्वा मूले मधु
मम देहक्रता वसो मम चित्त मुपायसी।।''

(अथर्ववेद)

उपरोक्त वेदवाक्य (श्लोक) के साकार रूप थे श्री भास्कर राव जी। अखिल भारतीय कार्यकर्ता बैठकों के समय मिलते ही तुरंत कंधे पर हाथ डालकर योग क्षेम पूछना, थोड़े में मन की बात को समझकर एक दो शब्दों में मन को शांति प्रदान करते थे। उसी से हिम्मत दुगुनी हो जाती थी।

एक बार की घटना-मैं पूर्वांध्र के संगठन मंत्री श्री कृष्णा जी के पास बैठकर बातचीत कर रहा था। विश्रांति का समय था। भास्कर राव जी पीछे से आकर दोनों के बीच बैठ गये-उनके दोनों हाथ हम दोनों के कंधों पर थे। बातचीत करने लगे। उस समय की आनंदानुभूति मैं अक्षरों में प्रकट नहीं कर सकता।

भास्कर राव जी के हस्तलिखित पत्र बार-बार पढ़ता था। साथ में रखकर कभी-कभी दोबारा पढ़ता था। उससे शक्ति मिलती थी।

पश्चिमांध्र प्रवास के बाद भाग्यनगर (हैदराबाद) रेल स्टेशन में मैंने विनोद भाव से पूछ लिया 'भास्कर राव जी, इस तप्पू को साथ में क्यों रखे हैं? आपका सहायक है। कुछ तो करता नहीं।' तब तप्पू ने हँसते-हँसते बताया-'मैं क्या करूं। मेरे जागने से पहले भास्करजी जाग जाते हैं। मेरे स्नान करने से पहले भास्करजी स्नान कर लेते हैं। कपड़ा धो लेते हैं। मेरे करने के लिए कुछ काम छोड़ते ही नहीं। मैं क्या करूं?' इतने में रेल की सीटी बजी-हँसते हँसते भास्कर राव जी को नमस्कार करके मैं कोच से नीचे उतर गया। रेल निकल पड़ी....मैं उन्हें मन ही मन निहारते हुए खड़ा रहा-साथ में जाने का मन कर रहा था।

स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण आखिर में भास्कररराव जी अ.भा. कार्यकर्ता सम्मेलन में नहीं दिखे तो -कुछ कमी है, ऐसा लग रहा था। सम्मेलन के तुरंत बाद भास्कर राव जी को देखने के लिए मुंबई जाने का मन ही मन तय कर लिया था। लेकिन अ.भा.ग्राम विकास प्रमुख का प्रवास पश्चिमांध्र में रहने के कारण नहीं जा सका। आधे मन से प्रवास पूरा किया। प्रवास के आखिरी दिन बातचीत में मेरा मन की इच्छा बताई तो बोले 'अरे बहुत गलत हो गया- देखना है तो तुरंत निकलो। ऐसा करंदीकर जी के कहने के कारण मुझसे रहा नहीं गया। किसी की अनुमति लिए बिना मुम्बई रवाना हो गया। मुम्बई कार्यालय पहुँचा तो कार्यालय सुनसान। कोई एक व्यक्ति दिखा तो पूछा-भास्कर राव जी कौन से कमरे में हैं? उन्होंने जवाब दिया-भाई साहब आप एक दिन देरी से आये हैं। भास्कर रावजी तो केरल चले गये। मेरा दुर्भाग्य समझकर सीधा वापस हैदराबाद लौट आया।

जशपुर के प्रार्थना कक्ष में कार्यकर्ता बैठक चल रही थी। बैठक तीन दिन चली। विषय बिंदु था वनवासियों की समस्या-शोषण इत्यादि। अपने ही लोग वनवासी बंधुओं का शोषण करते हैं। चर्चा दिन ब दिन तीव्र होती गई। आपस में लड़ाई झगड़ा हो रहा है, ऐसा लगता था। मैं चुपचाप सुनते देखते बैठा। प्रेरित होकर मैंने भी दो तीन शोषण की घटनाएं सुना दी। भास्कर

रावजी तटस्थ भाव सबकी बातें सुनते रहे। विषय गंभीर होता गया। तीसरे दिन समापन में भास्कर राव जी ने धीमी गति से शांतिपूर्ण शब्दों में बातचीत के रूप में (भाषण नहीं) बताया- 'आप सभी लोगों ने संवेदनशील मन से बहुत सारे विषयों पर चर्चा की। गुस्सा भी प्रकट किया। लेकिन मेरा निवेदन है कि शांत मन से सोचिए।

समाज रूपी शरीर में दांत भी अपने हैं और जीभ भी अपनी है। शोषण करने वाले और शोषित समाज दोनों अपने हैं। दांत ने गलत किया समझकर हाथ में पत्थर लेकर दांत तोड़ दिया तो नुकसान शरीर को होगा। जीभ ने गलत किया समझकर दांत से जीभ को कुतर डाला तो नुकसान शरीर का होगा। इसलिए मेरा सुझाव है कि दांत टूटना नहीं, जीभ कटना नहीं- समस्या का समाधान अवश्य करना। कुल मिलाकर अंततोगत्वा वनवासी बंधुओं को न्याय दिलवाना। इसमें दो राय नहीं अपनी बुद्धि कुशलता का उपयोग कर साम, दाम, दंड, भेद के उपाय करके वनवासी को न्याय दिलवाने में कोई कसर नहीं छोड़ना। वनवासी बंधुओं को न्याय दिलवाना ही अपना प्रथम कर्तव्य है।' मुझे समाधान मिला। इसी विचार के आधार पर हितरक्षा आयाम का जन्म हुआ ऐसा मैं समझता हूँ।

एक दिन दोपहर भोजन के बाद बिना कारण हैदराबाद संघ कार्यालय गया। कार्यालय प्रमुख के सामने बैठकर बातचीत कर प्रथम तल्ला में एक कमरे में कार्यकर्ता से मिला। नमस्कार करते ही उस कार्यकर्ता ने बताया कि आपके लिए एक चिट्ठी है कार्यालय प्रमुख के टेबल पर, मिली क्या? तुरंत नीचे उतरकर कार्यालय प्रमुख से पूछा-'क्या मेरे लिए कोई चिट्ठी है?' अरे हाँ, है। भाग्यनगर (हैदराबाद) में रहने वाले केरल के स्वयंसेवक लोग टी.वी. समाचार सुनकर भास्कररावकी दु:खद मृत्यु का समाचार मेरे लिए छोड़ गये थे। चिट्ठी पढ़ी तो पता चला कि भास्कररावजी की आत्मा पार्थिव शरीर को छोड़कर जहाँ से आयी थी वहाँ चली गयी। तब भी तुरंत निकलता तो भी भास्कररावजी का अतिंम दर्शन करना मुमकिन नहीं था। उनके अन्तिम दर्शन न कर पाने की पीड़ा आज भी मुझे सालती है।

एक दिन तत्कालीन संगठन मंत्री श्री गुणवंतसिंह जी ने मुझे बुलाकर अस्थियों का पात्र हाथ में देकर श्री शैलम के पास कृष्णा नदी में विसर्जन करने का निर्देश दिया तो मेरा अपना सौभाग्य समझकर और श्री शैलम पहुँचकर एक ब्राह्मण को सम्पर्क कर नदी किनारे पूजा करवाई। मेरे साथ में श्री काटराजु वेंकटय्याजी (चेचु जनजाति के कार्यकर्ता) पश्चिम आंध्र के उपाध्यक्ष भी थे। ब्राह्मण ने विसर्जन से पहले पूजा करते समय पूछा-'आपके क्या लगते हैं, रिश्ता क्या है? हम दोनों सहज रूप से एक साथ बोल पड़े ''हमारे बड़े भाई''। इसे एक सुखद आश्चर्य ही कहा जायेगा कि आजतक भास्कर राव जी के बारे में कोई नकारात्मक बात किसी के मुख से नहीं सुनी। भास्कर राव जी सबके थे, और अभी भी हैं। ❑

आगामी कार्यक्रम

मकर संक्रान्ति के पावन पर्व पर आगामी 14-15 जनवरी 2020 को जनजागरण अभियान के तहत पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता-हावड़ा महानगर की सभी समितियाँ अपने-अपने क्षेत्रों में कैंप लगायेंगी। समग्र समाज इस पावन दिन पर वनबंधु का स्मरण कर दायित्व बोध का परिचय दें एवं सहयोग का हाथ बढ़ाकर मकर संक्रान्ति को सही अर्थों में **'सम्यक् क्रांति'** बनायें।

स्मृतियों के झरोखे से .... भास्कर राव

मोहनलाल दास
नगरीय प्रमुख, नागालैण्ड

ध्येयनिष्ठ हो अगर समर्पण, विनयपूर्ण हो प्रतिपद
सहज साधनामय जीवन हो, रामकृपा हो सम्पद।
मेवा खाने की न लालसा हो यदि अपने मन में
सेवा का छोटा सा पौधा बन सकता है बरगद।।

श्रद्धेय गुरुवर विष्णुकांत शास्त्री जी की उपर्युक्त चतुष्पदी को मैंने भास्कर राव जी के जीवन में अक्षरश: घटित होते देखा है।

सन् 1995 अप्रैल माह में गुवाहाटी प्रवास पर माननीय श्री के. भास्कर राव जी आए हुए थे। गुवाहाटी के श्रीराम मन्दिर में कार्यकर्ताओं के लिए कार्यशाला वर्ग था। मैं दिन भर के कार्यक्रम के कार्यों में व्यस्त रहने के कारण रात्रि 11 बजे अपने कपड़े स्नानागार में धो रहा था। उसी समय भास्कर राव जी कुछ ढूँढते हुए स्नानागार के पास आए और मुझसे कहा कि कूड़ादान कहाँ है? मैंने पूछा क्या बात है? उन्होंने उत्तर देते हुए कहा मेरे हाथों में कागज के कुछ टुकड़े हैं, उन्हें मुझे कूड़ादान में डालने हैं। तब मैंने कहा मुझे दे दीजिए मैं डाल दूँगा, परन्तु उन्होंने नहीं दिए। दुबारा आग्रह करने पर मुझे एक ही शर्त पर उन्होंने दिए कि इन्हें कूड़ादान में ही डालना है। फिर मैंने धर्मशाला भवन के दूसरी मंजिल में रखे हुए कूड़ादान में वे सारे कागज के टुकड़े डाले। काम छोटा ही था पर उचित जगह पर उचित कार्य करना यह हमारा संस्कार है और अपने संस्कार से कोई गलत सीख न ले यह भास्कर राव जी का ध्येय भाव रहता था।

भास्कर राव जी के अन्दर एक और विशेषता थी जब वे किसी कार्यकर्ता को या किसी अन्य को पत्र लिखते तो वहाँ का पिन कोड अवश्य लिखते थे। बिना पिन कोड के पत्र पोस्ट नहीं करते थे। एक बार उन्होंने मुझसे कहा कि गंतव्य स्थान का पिन कोड मालूम है क्या? मुझे मालूम नहीं था। रमेश बाबू उस समय असम प्रांत के संगठन मंत्री थे। उन्होंने मुझसे गुवाहाटी के जी.पी.ओ. मे जाकर पिन कोड डायरेक्ट्री लाने को कहा, जिसमें सम्पूर्ण भारत के पिन कोड लिखे थे। मैं लेकर आया। उन्होंने पिन कोड लिखकर ही पत्र भेजा। यह बात तभी समझ आई कि पिन कोड लिखना कितना महत्व रखता है तथा जरूरी भी है।

एक दिन सुबह का समय था। जलपान के समय सर्वप्रथम भास्कर राव जी को उनके कमरे में जलपान दे दिया गया फिर हम सभी कार्यकर्ता भोजन कक्ष में जलपान करने लगे। उसी क्षण भास्कर राव जी हम सभी को रात्रि का बचा हुआ भात भाजा (राइस फ्राई) खाते हुए देखकर बोले-अच्छा तुम विशेष जलपान कर रहे हो, ऐसा कहकर हँसते हुए हम सबके साथ जलपान किया। उनकी सरलता देखकर मैं मंत्रमुग्ध था। यह सब बातें छोटी जरूर हैं पर इनसे अनुशासन, आत्मीयता एवं व्यवस्थित जीवन शैली की सीख अनायास मिल जाती है, जिससे कार्यकर्ता एवं साधारण व्यक्ति प्रेरणा लेकर सेवा सिंधु में डूब जाता है। यह सभी बातें भास्कर राव जी की छत्र-छाया एवं स्पर्श भाव के अनुभव को संजोए हम सभी कार्यकर्ता धन्य होकर कार्य कर रहे हैं। ❑

बालेश्वर की वनयात्रा

विउटि बसु
कायकर्ता शिवपुर महिला समिति

गत अक्टूबर महीने में वनवासी कल्याण आश्रम की व्यवस्था से हावड़ा की शिवपुर शाखा के करीब 32 सदस्यों की एक टोली वनयात्रा की योजना से रवाना हुई थी। गन्तव्य स्थल था बंगाल एवं ओड़िसा का सीमावर्ती अंचल बालेश्वर। हावड़ा से केवल तीन घंटों के सफर के बाद बालेश्वर पंहुचे थे। इतना निकट और इतना सुन्दर स्थान है हमें पता ही नहीं था।

वहाँ हम सबके स्वागत के लिये उपस्थित थे माननीय 'राजू जी मादला'। आप बंगाल,बिहार,ओड़िसा व सिक्किम के माननीय संगठन मन्त्री के नाते कार्यरत हैं। उन्हीं की देखरेख में हम सबके विश्राम, भोजन, आवास तथा भिन्न-भिन्न दर्शनीय स्थल परिदर्शन की व्यवस्था थी। तीन दिवसीय इस यात्रा में लगभग 600 कि.मी. यात्रा हम सब ने सम्पन्न की। ऐसी सुव्यवस्थित और आनन्ददायी यात्रा केवल राजू जी जैसे कुशल कार्यकर्ता तथा वहाँ के अन्य कार्यकर्ता बन्धुओं की सहायता के कारण ही सम्भव हो सकी। बालेश्वर के बंगरी पोशी में रहने की व्यवस्था हुई थी। वहाँ से श्रद्धाजागरण केन्द्र एवं ब्रह्मकुण्ड जलप्रपात देखने के लिये हम गये थे। श्रद्धाजागरण केन्द्र के कार्यकर्ता बन्धुओं एवं वनवासी बन्धुओं ने ईसाई मिशनरियों के साथ संघर्ष करके एक विशाल इलाका वापस लिया तथा वहां एक विशाल हनुमान जी की मूर्ति स्थापित की है। वे वहां ग्राम विकास के कार्य चला रहे हैं। उसके पश्चात चाकदि में छात्रों के द्वारा परिचालित खेलकेन्द्र में उत्साह से खेलकूद तथा तीरकमान का प्रदर्शन देख कर मन विभोर हो उठा। वहां के अनेक कृति छात्रों ने राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार हासिल किया है। दूसरे दिन शक्तिपीठ एवं देवकुण्ड दर्शन के लिये गये थे। उसके पश्चात् तगरिया जिले में ऐतिहासिक गुफाओं को देखने का मौका मिला जहां देशभक्त बाघा जतीन जी ने अपने क्रान्तिकारी योद्धाओं के साथ युद्ध का अभ्यास करके अंग्रेजों के साथ लड़ने की तैयारी की थी। तगरिया से खाजुरेदिया पहुंचे, जहाँ वनवासी तथा ग्रामवासी माँ बहनों के द्वारा सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र चल रहा है। वहाँ

से चलकर कालाबाड़िया में छात्रावास देखने के लिये गये थे। वहां 28 छात्र रहते हैं। उन छात्रों को प्रशिक्षण देने वाले सेवाव्रती कार्यकर्ताओं से भी परिचय हुआ। वे सभी कार्यकर्ता छात्रों को प्रशिक्षण हेतु पूर्ण समर्पित जीवन व्यतीत करते हैं। वाकई उनको देख कर मन में श्रद्धा-भाव जगा, उन्हें शत शत प्रणाम। अगले दिन गोहिरा पाल में वनवासी व ग्रामवासी के नृत्य गीत का आनन्द उत्सव में हम सब झूम उठे। अतिथियों का भारतीय परम्परा में कैसे स्वागत किया जाता है यह हम सभी शहरवासियों को उनसे सीखना पड़ेगा। दोपहर की ट्रेन में लौटने की तैयारी के चलते हम सब और आगे नहीं जा पाये, परन्तु फिर एक बार वहां जाने की इच्छा लिये हम कोलकाता लौटे। ❑

भास्कर राव - पथ प्रदर्शक

रमेश बाबू
अ.भारतीय श्रद्धाजागरण प्रमुख

श्रद्धेय भास्कर राव 1984 में कल्याण आश्रम के सह संगठन मंत्री के रूप में मुंबई पहुंचे। भास्कर राव को लगभग एक वर्ष तक मुम्बई के कार्यालय चंचल स्मृति में रहते हुये तत्कालीन अखिल भारतीय संगठन मंत्री रामभाऊ गोडबोलेजी के साथ धन संग्रह के कार्य में लगने का अनुभव मिला। भास्कर राव के लिये यह कार्य सहज नहीं था। केरल में रहते समय संगठन के लिये आवश्यक धन की पूरी आवश्यकता गुरु दक्षिणा से प्राप्त राशि से हुआ करती थी। स्वयंसेवकों में समर्पण का भाव जगाते हुए इस हेतु आवश्यक धन वे जुटा लेते थे। इस नए कार्य को करने में प्रारम्भ में उन्हें थोड़ी सी कठिनाई जरूर हुई होगी पर वे जल्दी ही राष्ट्र कार्य हेतु लोगों में समर्पण का भाव जगाकर इस पुनीत कार्य को तन्मयता से करने लगे।

1985 में जब उन पर अ.भा. संगठन मंत्री का दायित्व आया तो राष्ट्रीय स्तर पर कल्याण आश्रम कार्य शैशव अवस्था से गुजर रहा था। 1978 के बाद देशव्यापी बने इस कार्य की आयु लगभग आठ वर्ष मात्र थी। जशपुर क्षेत्र में कार्य प्रारंभ हुए 32 वर्ष बीत चुकने पर भी देश भर में कल्याण आश्रम कार्य की संकल्पना और कार्यशैली सही ढंग से विकसित नहीं हुई; ऐसा भास्कर राव के ध्यान में आया। यह कार्य उन्हीं को ही करना पड़ेगा ऐसा उन्होंने मन ही मन में संकल्प लिया। इसलिये कार्य को पूर्ण रूप से संस्थापक के चरणों में ही बैठकर समझने का निर्णय लेकर वे जशपुर आये। काफी समय उनके साथ रहकर जनजाति जीवन को और कल्याण आश्रम कार्य की बारीकियों को भास्कर राव ने समझने का प्रयास किया। आत्मीयता का भाव रखते हुये जनजाति समाज में भाव जागरण करना ही अपने कार्य का आधार है, यह बात उनके ध्यान में आई। जशपुर में अपना कार्य ग्रामीण स्तर तक फैलाव प्राप्त कर चुका था। श्रद्धा जागरण और चल-चिकित्सा प्रकल्प के माध्यम से कल्याण आश्रम का संपर्क दूर-दूर के गावों तक पहुंच गया था। इस पद्धति से जगाई गयी सामाजिक शक्ति का आभास भास्कर राव ने भांप लिया। इसी कार्यशैली को ही राष्ट्रव्यापी बनाने की आवश्यकता है, ऐसा उन्होंने सोचा लिया था।

1978 में पूजनीय सरसंघचालक बालासाहब देवरस जी के आग्रह पर कल्याण आश्रम ने कार्य को राष्ट्रव्यापी बनाने का निर्णय जब लिया तो इस हेतु जशपुर में एक अखिल भारतीय बैठक का आयोजन किया था। इस बैठक में देश भर के अधिकांश प्रांतों से संघ ने प्रचारकों को भेजा था। जशपुर का प्रकट कार्य छात्रावास होने के कारण इसी मॉडल को देश भर में अपनाया गया था। देश के कई शहरों में छात्रावास निर्माण कर जनजाति क्षेत्र से बालक-बालिकाओं को पढ़ने की सुविधा उपलब्ध कराने की दृष्टि से ही कार्य का विकास देश भर में हुआ। इस हेतु नगर समितियों का गठन करके आवश्यक सामान जुटाने का और भवन निर्माण का कार्य देश भर में होने लगा।

पू. देशपाण्डे जी से प्राप्त मार्गदर्शन के अनुसार इस नगर आधारित चलने वाले जनजातीय कार्य को ग्रामीण स्तर तक फैलाने के विषय को भास्कर राव जोर देने लगे। इस समय बालासाहब और भास्कर राव

के दिशानिर्देश में ऊँचे ऊँचे मकान नहीं ग्रामीण स्तर पर कार्य को फैलाने की आवश्यकता है, इस बात पर जोर देना हुआ हमें अनुभव में आया था। अपना कार्य vertically नहीं horizontally आगे बढ़ना चाहिये, ऐसा दोनों ने जोर देकर के कहा है। इसके फलस्वरूप गाँव-गाँव में समितियों का गठन होने लगा अखिल भारतीय बैठक में ग्राम समिति और ग्रामीण स्तर पर हो रहे कार्यों की पूछताछ होने लगी। कार्यकर्ताओं को ग्रामीण क्षेत्र में रात्रि निवास करना है, इसका भी संकेत प्राप्त होने लगा। भास्कर राव ने स्वयं ग्रामीण क्षेत्र में रात्रि निवास कर कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया। 65 साल की अवस्था के बावजूद उन्होंने अपने आप को ग्राम की सीमित व्यवस्था में समेटने का उदाहरण प्रस्तुत किया। हृदय की शल्य क्रिया के बाद भी कार्य के लिये आवश्यक होने के कारण स्वयं के कष्टों की चिंता न करते हुये पथ प्रदर्शक बने।

ग्रामीण स्तर पर कार्यकर्ताओं ने श्रद्धाजागरण केन्द्र, खेलकूद केन्द्र, एकल विद्यालय, बाल संस्कार केन्द्र आदि प्रकल्पों को माध्यम बनाकर कार्य प्रारंभ कर दिया। इसके फलस्वरूप देश के हजारों जनजातीय गाँव कार्य युक्त हो गये। आज हम संगठित ग्राम के विषय को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। वास्तव में कहा जाये तो यह संकल्पना भी पू. देशपाण्डे जी और भास्कर राव जी की ही है। वे चाहते थे कि जनजाति समाज को अपनी धर्म संस्कृति परम्परा पर आधारित होकर अपने में संगठित होकर अपना विकास स्वयं कर सके इस स्थिति पर उनको लाकर खड़ा कर देना ही कल्याण आश्रम का कार्य है। गाँव-गाँव में इस स्थिति को पाने का दूसरा नाम है संगठित ग्राम।

उत्तर पूर्वांचल के कार्य को भास्कर राव ने चुनौती के रूप में स्वीकारा। वे कहा करते थे दक्षिण भारत से पादरियों ने जाकर उत्तर पूर्वांचल में धर्मान्तरण के जरिये स्थिति को बिगाड़ने का काम किया। अलगाववाद के बीज बोये; इसलिये इसको सुधारने का काम भी दक्षिण के लोगों को ही करना पड़ेगा। अपने केरल के संबंधों को उन्होंने इस कार्य के लिये उपयोग किया। कई युवा कार्यकर्ताओं को चुनकर इस कार्य हेतु असम, नागालैण्ड, अरुणाचल, त्रिपुरा, मेघालय आदि प्रांतों में भेजा। कर्नाटक और महाराष्ट्र से भी वे अनेक कार्यकर्ताओं को इस हेतु प्रेरित किया।

इसके फलस्वरूप उत्तर पूर्वांचल की जनजातियों एवं धार्मिक संगठनों को साथ लेकर धर्मान्तरण के खिलाफ मोर्चा खोलने में कल्याण आश्रम कामयाब रहा। इस हेतु भास्कर राव ने लगातार उस क्षेत्र में प्रवास किया। जनजाति नेताओं से संबंध जोड़े। कार्यकर्ताओं को उत्साह देने का हर संभव प्रयास किये।

मेघालय के स्वर्गीय एंडरसन मावरी, नागा राज्य के एन.सी.जेलियांग, मणिपुर के प्रोफेसर गांग्मुमई कामई, अरुणाचल के गोल्गी बोटे, तालिम रुकबो, त्रिपुरा के श्री विक्रम बहादुर जामातिया और अजय देववर्मन, असम के रतन क्रो और श्री जलेश्वर ब्रह्म आदि के साथ घनिष्ठता निर्माण करने के लिये भास्कर राव ने पर्याप्त समय दिया। उन सबकी कल्पना को साकार करने के लिये उन्होंने पूर्ण रूप से समर्थन दिये। फलस्वरूप इन सब प्रदेशों में स्वधर्म रक्षा हेतु किये जाने वाले प्रयासों में तेजी आयी। इससे उत्तर पूर्वांचल के कार्य को एक नई दिशा प्राप्त हुई। स्थानीय समाज कल्याण आश्रम को अपना समझने लगा। जनजाति धर्म संस्कृति सुरक्षा मंच के गठन में उनके ये सब प्रयास आधारभूत सिद्ध हुए।

वनवासी कल्याण आश्रम के कार्य में खेलकूद और हितरक्षा आयाम को भी खड़ा करने में भास्कर राव की मुख्य भूमिका रही। पहली राष्ट्रीय क्रीड़ा प्रतियोगिता आयोजित करने में मुंबई के बचपन की मित्र मण्डली का सहयोग लिया। इस भव्य आयोजन से एक यशस्वी आयाम का सूत्रपात हो गया। हितरक्षा कार्य के जरिये जनजाति

समाज के अस्तित्व से जुड़ी अनेकों समस्याओं को सुलझाने में कल्याण आश्रम सफल हुआ। पूज्य देशपाण्डे जी के निधन के बाद देश में अस्मिता जागरण अभियान चलाते हुये सम्पूर्ण देश के जनजाति समाज के अन्दर आत्मविश्वास का संचार कराने के कार्य को भास्कर राव ने नेतृत्व दिया। पूज्य स्वामी असीमानन्द जी द्वारा देश के कोने-कोने में विशेषकर गुजरात के डांग जिले में हुई घर वापसी अभियान का भास्कर राव ने खुलकर समर्थन किया। भास्कर राव के कार्यकाल में कार्यकर्ताओं को बड़ी संख्या में अन्य प्रांतों में संगठन हेतु भेजा गया।

जनजाति समाज से युवा-युवतियों को आगे आने के लिये उन्होंने प्रेरित किया। कल्याण आश्रम में पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं की संख्या 1250 तक पहुँच गई थी। कार्यकर्ता संभाल की भी आवश्यक व्यवस्था उन्होंने खड़ी कर दी थी। आज उनके जाने के 17 साल बाद हम उनका जन्म शताब्दी वर्ष मना रहे हैं। उन्होंने जो पथ-प्रदर्शन किया वह वनवासी क्षेत्र के कार्य हेतु आज भी उतना ही महत्व रखता है। उनके पदचिन्हों पर चलने का प्रयास हम सब करेंगे, यह संकल्प लेकर आगे बढ़ना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी। ❑

सच्चे अभिभावक थे : भास्कर राव

डॉ.राज किशोर हाँसदा
अ.भा.सह सयंजोक,जनजाति सुरक्षा मंच

मैंने भास्कर राव जी को पहली बार अखिल भारतीय कार्यकर्ता सम्मेलन 1994 को लखनऊ में देखा था। उस समय मैं नये-नये पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में जुड़ा था। लगभग एक वर्ष हो रहा था। इसलिए उनसे बहुत अधिक निकटता नहीं बन पायी। जब मुझ पर उत्तर बिहार प्रांत का सह संगठन मंत्री का 1998 में दायित्व आया तब से उनके साथ निकट का सम्बन्ध हुआ। उत्तर बिहार प्रांत में मेरा केन्द्र पूर्णिया था। मुझको परिवार के साथ रहना था। तब उस समय मा.भास्कर राव जी ने पूछा- पत्नी को कहाँ रखोगे। बाद में उन्होंने सुझाव दिया जहाँ पर कल्याण आश्रम का कार्य है, स्थायी प्रकल्प है जैसे विद्यालय, छात्रावास आदि वैसी जगह में परिवार को रखना। ताकि प्रवास करने में सुविधा होगी। उनके सुझाव के अनुसार ही मैने परिवार को पूर्णिया में रखा। पूणिया में तिलका माझी बालक छात्रावास है। उन दिनों मोबाइल फोन नहीं था, बात-चीत करने के लिए या संवाद आदान-प्रदान करने का माध्यम किसी का टेलीफोन या पत्र द्वारा ही होता था। पूज्य भास्कर राव उन दिनों अ.भा.संगठन मंत्री हुआ करते थे। वे एक सच्चे अभिभावक का व्यवहार सभी कार्यकर्ता से करते थे। वे कहते थे किसी भी बात को मन में छिपाकर नहीं रखना, खुलकर बताओ।

वे धैर्यपूर्वक किसी भी बात को सुनते थे और हर समस्या का समाधान भी करते थे। वे पत्र का जवाब अवश्य देते थे। छोटी-छोटी बातों पर उनका ध्यान विशेष रूप में रहता था। वे कहते थे अपने अन्दर कभी भी हीन भावना नहीं होनी चाहिए। कोई भी कार्य करने से डरना नहीं, ये नहीं सोचना कि क्या होगा या नहीं होगा। कार्य करते-करते सीख जायेंगे। पहले खराब होगा, बाद में अच्छा हो जाएगा। वे अपने बौद्धिक-भाषण के अन्दर एक बात का अवश्य उल्लेख करते थे कि सबसे पहले क्या करना है? यह बात समझ में आ गई तब कैसे करना अपने आप आ जाएगा। वे सही अर्थों में अभिभावक थे। उनका स्मरण एवं मार्गदर्शन आज भी हम सबके लिए प्रेरणास्पद एवं आश्वस्ति का कार्य करता है। ❑

हरिद्वार में आयोजित अखिल भारतीय बैठक का जनजाति समाज आक्रमणों को पहचानें, साहस के साथ आगे बढ़ें...

वनवासी कल्याण आश्रम की अखिल भारतीय बैठक 20 से 22 सितम्बर 2019 तक पतंजलि योग पीठ-हरिद्वार में सम्पन्न हुई। देश भर के सभी राज्यों तथा पड़ोसी देश नेपाल से मिलकर कुल 600 महिला- पुरूष प्रतिनिधि इसमें उपस्थित रहे। जनजाति समाज जीवन में चल रहे वर्तमान समय के विभिन्न विषयों के बारे में सत्र हुए, चर्चा हुई और भविष्य की योजना बनी। उद्घाटन सत्र में उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत एवं पतंजलि योग पीठ के आचार्य बालकृष्ण सहित कई महानुभव मंच पर उपस्थित थे। दीप प्रज्ज्वलन के साथ उत्तर-पूर्वांचल के कार्यकर्ताओं द्वारा परम्परागत प्रार्थना की गई। सभाखण्ड में एक पवित्र वातावरण निर्माण हुआ। राज्य के मुख्यमंत्री श्री रावत ने कहा कि वनवासी कल्याण आश्रम जनजाति समाज को मजबूत करने का काम कर रहा है। आश्रम के कार्यकर्ता 'तू-मैं एक रक्त' के भाव को मन में रख कर कार्य कर रहे, जो सराहनीय है।

पतंजलि योग पीठ के महामंत्री आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि हमारा एक-एक पल राष्ट्र के लिए समर्पित है। वनवासी कल्याण आश्रम जनजाति समाज को जागृत करने का काम कर रहा है जो अभिनंदनीय है। यहाँ अपेक्षा से ज्यादा कार्यकर्ता बैठक निमित्त पधारे, हमारा सौभाग्य है-सबका स्वागत है। विशिष्ट

अतिथि मुम्बई के प्रसिद्ध चार्टर्ड एकाउन्टेट मोहन लाल भंडारी, कल्याण आश्रम के उपाध्यक्ष कृपा प्रसाद सिंह और निलिमाताई पट्टे तथा महामंत्री योगेश बापट, सेवा प्रकल्प संस्थान के प्रांत अध्यक्ष सुरेश पांडे जैसे महानुभाव उद्घाटन के मंच पर उपस्थित थे। इस मंच पर दो पुस्तकों का विमोचन हुआ। वनवासी कल्याण आश्रम के पूर्व राष्ट्रीय संगठन मंत्री मा. भास्करराव के जीवन पर आधारित-'भास्कर राव प्रचारक-कर्मयोगी', मूल मलयालम पुस्तक का हिन्दी अनुवाद कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय श्रद्धाजागरण प्रमुख रमेश बाबू ने किया है। वैसे ही उत्तर-पूर्वांचल जैसे कठिन क्षेत्र में जिन्होंने कार्य विस्तार किया ऐसे कार्यकर्ता वसंतराव भट्ट के जीवन पर आधारित पूर्वोत्तर के प्रहरी वसंतराव भट्ट पुस्तक को गोरखपुर निवासी जगदम्बा मल्ल ने लिखा है।

एक दिन योगगुरू बाबा रामदेव भी कार्यकर्ताओं को मिलने पधारे और उनकी उपस्थिति में उत्तराखण्ड राज्य की जनजातियों ने सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत किये।

पूज्य रामदेव बाबा ने भी अपनी रोचक शैली में सबका मार्गदर्शन किया। बैठक में प्रतिदिन प्रात: योगासन में कई कार्यकर्ता बड़े उत्साह के साथ सहभागी होते थे। एक दिन गंगा स्नान का भी आयोजन किया था। इस बैठक के एक दिन पूर्व राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न हुई। जनजाति हितरक्षा प्रमुख गिरीश कुबेर ने कार्यकारिणी में पारित प्रस्ताव की सबको जानकारी देते हुए अपने-अपने कार्यक्षेत्र में जाने के पश्चात क्या करना चाहिए?, का मार्गदर्शन किया। कार्यकर्ताओं के सुझावों का स्वागत भी किया।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी में विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई और भविष्य के कार्यक्रमों की योजना बनी। कल्याण आश्रम द्वारा प्रकाशित 'आचार्य मार्गदर्शिका' तथा 'छात्रावास मार्गदर्शिका' ऐसी दो पुस्तकों का विमोचन हुआ। देश भर में जनसंख्या में जो छोटी जनजातियाँ है, अपने अस्तित्व के लिए जो है संघर्षरत है, के प्रतिनिधियों ने अपने क्षेत्र की स्थिति के बारे में कथन किया और कल्याण आश्रम इन जनजातियों के बीच कैसे काम कर रहा है कि जानकारी भी दी।

राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री ने कहा कि 2021 में जो जनगणना होने वाली है, इसके पूर्व कुछ व्यक्ति अलग धर्मकोड के लिए मांग कर रहे है। ओ.आर.पी. क्या है? ये हमें समझना होगा। समाज को जागृत करना होगा। समाज विघातक शक्तियों द्वारा जनजाति समाज को पहले ओ.आर.पी. में लिखने के लिए कहना और बाद में उनमें से धर्मान्तरण कराना। इस संकट की जानकारी गाँव-गाँव में देनी है। देश की वर्तमान जनसांख्यिकी स्थिति क्या है? की जानकारी देने हेतु सेन्टर फॉर पॉलिसी स्टडीज् के डॉ जे. के. बजाज पधारे थे। उन्होंने वर्तमान भारत में ओ.आर.पी. के बारे में अपने अध्ययन के आधार पर विषय प्रस्तुत किया और कार्यकताओं के सुझाव भी सुने।

बैठक के अंतिम दिन राष्ट्रीय संगठन मंत्री अतुल जोग ने कार्यकताओं का मागदर्शन किया। भविष्य में होने वाले कार्यक्रम जैसे 15 नवम्बर के दिन 'जनजाति गौरव दिन', राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता, स्थापना दिन के बारे में जानकारी देते हुए कार्यरत रहने का

आह्वान किया। स्वास्थ्य ठीक न होने कारण राष्ट्रीय अध्यक्ष जगदेवराम उराँव इस अखिल भारतीय बैठक में उपस्थित नहीं हुए। ऐसा बहुत वर्षों बाद हुआ होगा। उनकी उपस्थित सभी के लिए सदैव प्रेरणा देने वाली रहती है। इस बार उन्होंने संभाजी नगर (औरंगाबाद-महाराष्ट्र) के अस्पताल से कार्यकर्ताओं को संदेश भेजा। समापन सत्र में महामंत्री योगेश बापट ने उसका वांचन किया। समापन सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सर कार्यवाह दत्तात्रय होसबले ने कार्यकर्ताओं को वर्तमान जनजाति क्षेत्र की चुनौती भरी स्थिति से अगाह करते हुए अधिकाधिक कार्य करने का आह्वान किया। ❑

स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुण्डा हम सभी के आदर्श

दिल्ली में मनाया जनजाति गौरव दिन

सीमा ओझा

वनवासी कल्याण आश्रम-दिल्ली द्वारा आयोजित 'जनजाति गौरव दिन' 15 नवम्बर 2019 को भारतीय परम्परा अनुसार दीपप्रज्वलन के साथ प्रारम्भ हुआ।

जाने-माने बांसुरी वादक सिद्धार्थ के मनमोहक बांसुरी के सुरों का प्रेक्षकों ने तालियों के साथ अभिनंदन किया। मंचस्थ सभी का परिचय एवं स्वागत प्रदेश कोषाध्यक्ष विनोद अग्रवाल ने किया। केन्द्रीय खाद्य संस्करण राज्यमंत्री डॉ. सानिका होरा ने अपने वक्तव्य में बताया कि दो दिन पूर्व ही एम्स से छुट्टी मिली तो मैं इस कार्यक्रम में आ सका। हम बिलासपुर से 200 वर्ष पूर्व मज़दूरी करने आसाम चले गए थे और आज हम वहाँ के मानो असमिया हो गए। उन्होंने कहा कि असम के चायबागानों में 80 लाख झारखण्ड एवं अन्य राज्यों से आई जनजातियाँ रहती हैं और वे सब आज बिरसा जयंती मना रहे हैं।

दिल्ली के प्रज्ञा आर्ट द्वारा बिरसा मुण्डा के जीवन पर आधारित नाटिका का मंचन हुआ। नाटक इतना प्रभावी रहा कि कुछ समय के लिए सभागार में उपस्थित सब अतीत में चले गए। आज बिरसा के जन्मदिन के निमित्त ये नाटक बहुत ही सामयिक कह सकते हैं। आयोजकों ने और दर्शकों ने प्रज्ञा आर्ट एवं कलाकारों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

कार्यक्रम की एक विशेष उपस्थिति थी - लुथिनीया से आई गुरु माता जो स्वयं और उनके सारे भक्त गण आज भी सनातन परम्परा की तरह जीवन जी रहे हैं और ईसाई तथा साम्यवादी शक्तियों के साथ अस्तित्व के लिए सतत संघर्ष कर रहे है। उनके मन में भारत के प्रति आत्यंतिक आदर देखने को मिला। ज्ञान प्रकाशन द्वारा 16 खण्डों में प्रकाशित 'एनसायक्लोपीडिया मुण्डारिका' उन्हें भेट दी गई। **अपना वतन अपना ही होता है** से लेकर धारा 370 एवं रामजन्मभूमि जैसे वर्तमान विषयों पर गजेन्द्र सोलंकी का काव्यपाठ सभी में उत्साह का संचार कर गया। ये सभी कार्यक्रम यानि एक ही थाली में एक से अधिक मिष्ठान्न जैसा था। अंत में झारखण्ड से पधारे डा. राजकिशोर हाँसदा का अपनी अनोखी शैली का भाषण सभी को जनजाति समाज और सारे भारतीय कैसे एक हैं, की अनुभूति करा गया। आज के प्रमुख वक्ता ने स्वयं संथाली समाज और समग्र हिन्दू समाज में धार्मिक साम्यता कैसी है पर शोध निबंध लिख कर डॉक्टरेट की उपाधि पाई है, यह उनके भाषण में दिये उदाहरणों से झलक रहा था।

दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष शान्ति स्वरूप बंसल जी ने सनातन धर्म सभा के ट्रस्टी एवं कार्यक्रम को सहयोग करने वाले सभी के प्रति आभार प्रदर्शन किया और आरोग्य आयाम का जिम्मा लेकर कार्यरत डॉ. विकास जी ने मंच का सफल संचालन किया। नरेला छात्रावास के छात्रों के सामूहिक वंदेमातरम् के साथ जनजाति गौरव दिन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में पधारे सभी ने सहभोज कर स्नेह का अनुभव किया। ❑

कोलकाता हावड़ा महानगर ने

गणेश पूजन से धनसंग्रह अभियान प्रारंभ किया

तारा माहेश्वरी, अध्यक्षा, गोवाबागान महिला समिति

प्रतिवर्ष की तरह कोलकाता-हावड़ा महानगर का इस वर्ष का गणेश पूजन कार्यक्रम दिनांक 17 नवम्बर 2019 को कल्याण भवन कोलकाता में सम्पन्न हुआ। महानगर की प्रत्येक समिति के महिला-पुरुष कार्यकर्ता उपस्थित थे। त्याग, सेवा और उत्कट समर्पण से सम्पन्न उत्सव मूर्तियाँ मंच की शोभा बढ़ा रही थीं। सर्वप्रथम सभी ने भावपूर्ण हृदय से ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता गणपति गजानन का पूजन किया। कार्यक्रम दो सत्रों में विभाजित था। प्रथम सत्र का संचालन करते हुए कोलकाता महानगर के संगठनमंत्री श्री महेश मोदी ने गत वर्ष

की आय-व्यय का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् प्रत्येक समिति के एक कार्यकर्ता सदस्य को आमंत्रित कर उनसे अपनी-अपनी समिति का लक्ष्य बताने का अनुरोध किया गया। कार्यकर्ता सदस्यों ने बड़े उत्साह के साथ अपनी समिति का परिचय दिया और कल्याण आश्रम के पुनीत कार्य के लिए एकत्रित की जाने वाली धनराशि की घोषणा की। अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के उपाध्यक्ष माननीय कृपाप्रसाद सिंह जी द्वारा दिए

गए बौद्धिक ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी को भाव विह्वल कर दिया। कल्याण आश्रम के बढ़ते प्रभाव पर सुचिन्तित वक्तव्य दिया। सर्वे भवंतु सुखिन: के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए भगवान बिरसा मुंडा की को याद किया। हमारा वनवासी समाज ही हमारी संस्कृति का पुरोधा है। स्व.बसंत राव भट्ट और स्व.भास्कर राव कलंबी से जुड़ी एक रोचक घटना को साझा करते हुए आदरणीय कृपा जी ने अपना वक्तव्य पूरा किया। सभी कार्यकर्ताओं ने स्वयं में नूतन ऊर्जा का अनुभव किया। अपनी पौत्री के जन्म के उपलक्ष्य में आयोजित श्री मूलचंद जी डागा भोजन का आनंद उठाने के पश्चात कार्यक्रम संपन्न हुआ। ❑

मेरे प्रेरणा स्त्रोत

वीनापानी दासशर्मा
सह महिला प्रमुख, अ.भा.व.कल्याण आश्रम

मैं 1986 में सर्वप्रथम कल्याण आश्रम में आई थी। मेरा केन्द्र पुरुलिया का निवेदिता छात्रावास था। मैं केवल बंगाली भाषा बोलती थी, जानती थी। कुछ समय बाद मुझे नागपुर में आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलन में जाने का मौका मिला। हिन्दी नहीं आने के कारण मैं अकेली निराश होकर बैठी रहती थी। दूसरे दिन भास्कर राव जी ने मुझे देखते ही पूछा-कहाँ से आई हो? मैने कहा - 'पश्चिम बंगाल से आई हूँ।' मैने कहा मैं हिन्दी नहीं जानती, तब उन्होंने मुझे स्नेह भरे शब्दों में कहा, 'धीरे-धीरे सीख जाओगी' और उन्होंने अपना अनुभव मुझे अंग्रेजी में बताया ''शुरू शुरू में मैं हिन्दी में लिखा हुआ भाषण देता था। एक बार किसी ने कहा कि जो व्यक्ति पढ़कर भाषण देता है वह अखिल भारतीय संगठन मंत्री कैसे हो सकता है?'' ऐसा कहकर उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखकर कहा कि घबराने की कोई बात नहीं है, काम करते रहो, सब ठीक हो जाएगा। उनकी इस बात से मुझे इतनी प्रेरणा और सांत्वना मिली कि आज मैं हिन्दी में सहजता से बोल लेती हूँ।

1998 में मेरे थॉयरायड के ऑपरेशन के पूर्व आश्वस्त करते हुए उन्होंने कहा कि 'पूरा कल्याण आश्रम तुम्हारे साथ और तुम जल्दी ठीक हो जाओगी।' उनके स्नेह भरे वचनों ने मेरे लिए संजीवनी का काम किया। आज तक इतने सालों से मैं वनवासी कल्याण आश्रम का कार्य उनकी प्रेरणा से प्रेरित होकर ही कर रही हूँ। हर कार्यकर्ता में वे कार्य करने की इच्छा जागृत कर देते थे। उनके पदचिन्हों पर चलने की शक्ति ईश्वर मुझे दे, यहीं प्रार्थना करती हूँ। ❑

जशपुर में मनाई गई भास्कर राव की जन्मशती

वनवासी कल्याण आश्रम के केन्द्र प्रांत जशपुर में 5 अक्टूबर 2019 को माननीय भास्कर राव जी के जन्मशती के उपलक्ष में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस निमित्त जशपुर के राजा रणविजय सिंह जूदेव-सांसद; मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे और वनवासी कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष कृपा प्रसाद सिंह तथा संयुक्त महामंत्री रामलाल सोनी वक्ता थे।

मंचस्थ महानुभावों के शुभ हाथों माननीय भास्कर राव जी के जीवन पर आधारित पुस्तकों को विमोचित कर उसकी जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम में तेतू राम, रामेश्वर उराँव, कमली भगत एवं अन्य तीन कार्यकर्ताओं ने भी अनुभव कथन किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम भावपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

वैसे मा.भास्कर राव का राष्ट्रीय संगठन मंत्री के नाते केन्द्र मुम्बई रहा परन्तु जशपुर में उनका कई बार आना हुआ। यहाँ के कार्यकर्ताओं का उन्होंने समय-समय पर मार्गदर्शन किया। कार्यकर्ता के साथ आत्मीय सम्बन्ध ऐसे बंधे कि आज भी सभी अपनी प्रेरणा के रूप में उनका स्मरण करते है। उनका पवित्र, स्नेहमय, सेवापारायण तथा समर्पित जीवन कार्यकर्ताओं के लिए अनुकरणीय आदर्श है।इस अवसर पर विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया और मदन टेकाम ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया। शिवरामकृष्ण एवं उनके साथियों ने सभी व्यवस्थाएं संभाल कर कार्यक्रम को सफल बनाया। छात्र-छात्राओं सहित नगर के अनेक गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित थे। ❑

अनुकरणीय

डॉ रंजना त्रिपाठी
कार्यकर्ता ,अलीपुर महिला समिति

मध्य-हावड़ा पुरुष समिति के सेवा-पात्र प्रमुख सादा जीवन उच्च विचार के धनी श्री संजय अग्रवाल का मानस दीपक–योजना परिकल्पना के विविध विकास में रमा रहता है। जीवन का हर-पल सदा इसी चिंतन में लगा रहता है कि कल्याण आश्रम की योजनाओं को सफल बनाने के लिए तन-मन-धन समर्पित होता रहे।इस योजना में केवल संजय अग्रवाल ही नहीं बल्कि उनका पूरा परिवार भी लगा हुआ है । उनके परिवार के सदस्यों ने अथक परिश्रम करके 5,000 दीपक तैयार किये। दीपावली–पूजन के लिए उन दीपकों को घर-घर में पहुँचाकर 17,530/- की राशि एकत्रित कर कल्याण आश्रम के हावड़ा कार्यालय में धनतेरस के दिन जमा किया। अपने इस सेवा-कार्य के द्वारा उन्होंने आज की पीढ़ी को त्याग-समर्पण और सेवा भाव का संदेश दिया है। कल्याण आश्रम श्री संजय अग्रवाल जी के प्रति आभार व्यक्त करता है।

• **वन-वसुंधरा का मल धोने को**
भू हरी-हरी कर देने को, गंगा-जमुनाएँ बहा सकूँ
इतना दे देना मेरे प्रभु, देर लगाना मत।

लेकटाऊन समिति के सक्रिय कार्यकर्ता श्री संजय जी अग्रवाल की पुत्री सुश्री स्नेहिल अग्रवाल ने अपने पहले वेतन में से 31,000/- की राशि कल्याण आश्रम के विभिन्न प्रकल्पों के विकास हेतु समर्पित कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। उल्लेखनीय है कि स्नेहिल युवा समिति की समर्पित कार्यकर्ता है। कल्याण आश्रम स्नेहिल के इस यशस्वी कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करता है और शुभकामनाएँ व्यक्त करता है कि स्नेहिल के हृदय में अपने वन-बंधु के प्रति संवेदनशीलता उत्तरोत्तर वृद्धिंगत हो।

• पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता महानगर के उपाध्यक्ष श्री मूलचंदजी जगवाई के घर बज उठी बधाइयाँ। शुभकामनाओं की झड़ी लग गई, क्योंकि उनका प्रासाद गमक उठा उनकी प्यारी सुपौत्री के नवागमन से। खुशियों का तो जैसे अंबार लग गया। अपने इसी उल्लास को साझा करने के लिए कल्याण आश्रम के गणेश-पूजन कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोज्य बैठक में पधारे सभी कार्यकर्ता बंधुओं के लिए दोपहर के भोजन की व्यवस्था की। इसी प्रकार हावड़ा महानगर के सहमंत्री श्री राजेश अग्रवाल एवं श्रीमती अनिता अग्रवाल ने भी पौत्री के जन्म की खुशी में वनवासी सेवा कार्यों के लिए राशि समर्पित की।

• विवाह के मंगल प्रसंग पर वनवासी को स्मरण करना कार्यकर्ताओं का स्वभाव बन गया है। कोलकाता महानगर के चिकित्सा प्रमुख श्री विवेक गोयल ने अपने सुपुत्र डॉ. आयुष गोयल, श्री शंकर जी अग्रवाल ने अपनी भतीजे आयुष्मान हिमालय, हावड़ा के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री ओमप्रकाश जी गुप्ता ने अपने सुपुत्र आयुष्मान सचिन एवं दिनेश जी कंकरानिया ने अपनी सुपुत्री सौ.कां.अंकिता के विवाहोपलक्ष पर संगठन कार्य हेतु स्वेच्छा से **'मंगल निधि'** समर्पित की। ❑

बोध कथा...

हार मानना विकल्प नहीं

एक बार एक गरीब आदमी का जीवन समस्याओं से घिर गया था और उसे कोई काम हाथ नहीं लग रहा था। वह अपने जीवन की लगातार मिलने वाली असफलताओं के आगे घुटने टेकने ही वाला था कि किसी ने उसे एक संत के पास जाने का मार्ग सुझाया। हताश होकर वह व्यक्ति भी उस संत के पास पहुंचा और उन्हें अपनी सभी परेशानियां बताई। संत ने उसे कहा 'चिंता मत करो, तुम्हें काम जरूर मिलेगा, इस तरह हताश और निराश मत हो।' संत बोले मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूं, जिसके बाद तुम्हारी सभी समस्याएं समाप्त हो जायेगी। एक छोटे बच्चे ने बांस और कैक्टस का एक-एक पौधा लगाया। बच्चा रोज पौधों की समान रूप से देखभाल करता और इस तरह पूरा एक वर्ष बीत गया। कैक्टस का पौधा तो पनपने लगा, लेकिन बांस का पौधा जैसा था, वैसा ही रह गया। बच्चे ने हिम्मत नहीं हारी और उसने दोनों की देखभाल करना जारी रखा। कुछ महीने और बीत गए, लेकिन बांस का पौधा अभी भी नहीं पनपा था। बच्चा निराश नहीं हुआ और उसी लगन से उन दोनों की देखभाल करता रहा। कुछ महीनों के बाद बांस का पौधा भी पनप गया और कुछ ही दिनों में कैक्टस के पौधे से भी बड़ा हो गया। संत ने उस आदमी से कहा, दरअसल वह बांस का पौधा पहले अपनी जड़े मजबूत कर रहा था, इसीलिए उसे बढ़ने में समय लगा। जब जड़ें मजबूत हो गई तो वह तेजी से बढ़ा। जीवन के संघर्षों के साथ थी ऐसा ही है। अगर हिम्मत ना हारकर आप डटकर पूरी लगन के साथ उनका सामना करेंगे तो एक ना एक दिन सफलता तुम्हारी ही होगी। क्योंकि कभी-कभी परिणाम मिलने में समय लगता है, हमें बस हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। ❑

कविता.....

उन वसंत दा को स्मर लें

लक्ष्मीनारायण भाला

छत्र पिता का नहीं मिल सका, पर माँ के थे लाडले ।
भट्ट वंश के कुल-गौरव थे, मामा के घर पढ़े-पले ।।
उन वसंत दा को स्मर लें ।।ध्रु।।

दिन वसंत-पंचमी पर्व का,
नियति से निर्धारित था ।
मातृ-कोख से मातृभूमि पर,
आगमनी-क्षण पावन था ।।
वरद-हस्त माँ सरस्वती का,
राष्ट्र-भक्ति के संस्कारों का,
जो परिणाम हुआ था मन पर,
त्याग मार्ग पर बढ़े चलें ।।1।।
उन वसंत दा को स्मर लें

छोड़ा मध्यप्रदेश, चल दिए,
बंग भूमि की सेवा में ।
व्यक्ति-व्यक्ति को स्नेह-सूत्र से,
पिरो दिया एक माला में ।।
वनवासी जीवन को जाना,
उनकी गरिमा को पहचाना,
ज्ञानी, धनी, शहर के वासी,
वन यात्रा सब मिल कर लें ।।2।।
उन वसंत दा को स्मर लें

पूर्वोत्तर की विषम स्थिति में,
आप मिले जाकर सबसे ।
कोई समय, कोई धन देता,
कोई अपनी प्रतिभा दे ।।
षड्यंत्रों का भेद बताया,
हर जनजाति को समझाया,
अपनी पहचानों की रक्षा,
होती है हिन्दुत्व तले ।।3।।
उन वसंत दा को स्मर लें ❑

Printed Matter

Book - Post

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram
161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com